खण्ड-06 सत्र -04 (भाग-05) / अंक-41 मंगलवार 15 नवम्बर, 2016 / 24 कार्तिक, 1938 (शक)

दिल्ली विधान सभा

की

कार्यवाही

सत्यमेव जयते

छठी विधान सभा

तीसरा सत्र

अधिकृत विवरण

(खण्ड-04 (भाग-05) में अंक 41 सम्मिलित है।)

दिल्ली विधान सभा सचिवालय

पुराना सचिवालय, दिल्ली-110054

सम्पादक वर्ग

EDITORIAL BOARD

प्रसन्ना कुमार सूर्यदेवरा

सचिव

PRASANNA KUMAR SURYADEVARA

Secretary

एम.एस. रावत

उप-सचिव (सम्पादन)

M.S. RAWAT

Deputy Secretary (Editing)

विषय सूची

सत्र-4 भाग (5) मंगलवार, 15 नवम्बर, 2016/24 कार्तिक, 1938 (शक) अंक-41

क्रसं.	विषय	पृष्ठ सं.
1	सदन में उपस्थित की सूची	1-2
2	शोक संवेदना	3-6
3	माननीय अध्यक्ष द्वारा व्यवस्था	6-13
4	संकल्प (नियम-90)	14-61
5	मुख्यमंत्री का वक्तव्य	61-75

दिल्ली विधान सभा

की

कार्यवाही

सत्र-04 भाग (5) मंगलवार, 15 नवम्बर, 2016/24 कार्तिक, 1938 (शक) अंक-41

दिल्ली विधान सभा

सदन अपराह्न 2:00 बजे समवेत हुआ।

सदन में उपस्थित सदस्यों की सूची:

1 श्री शरद कुमार
2 श्री संजीव झा
3 श्री पवन कुमार शर्मा
4 श्री अजेश यादव
5 श्री महेंद्र गोयल
6 श्री वेद प्रकाश
7 श्री सुखवीर सिंह दलाल
8 श्री ऋतुराज गोविंद
9 श्री रघुविन्द्र शौकीन
10 श्रीमती बंदना कुमारी
11 श्री जितेंद्र सिंह तोमर
12 श्री राजेश गुप्ता
13 श्री अखिलेश पति त्रिपाठी
14 श्री सोमदत्त
15 सुश्री अलका लाम्बा
16 श्री आसिम अहमद खान
17 श्री विशेष रवि
18 श्री हजारी लाल चौहान
19 श्री शिव चरण गोयल
20 श्री गिरीश सोनी

21 श्री जरनैल सिंह (राजौरी गार्डन)
22 श्री जरनैल सिंह (तिलक नगर)
23 श्री राजेश ऋषि
24 श्री महेंद्र यादव
25 श्री नरेश बाल्यान
26 श्री आदर्श शास्त्री
27 सुश्री भावना गौड़
28 श्री सुरेंद्र सिंह
29 श्री विजेंद्र गर्ग
30 श्री प्रवीण कुमार
31 श्री मदन लाल
32 श्री सोमनाथ भारती
33 श्रीमती प्रमिला टोकस
34 श्री नरेश यादव
35 श्री करतार सिंह तंवर
36 श्री प्रकाश
37 श्री अजय दत्त
38 श्री दिनेश मोहनिया
39 सरदार अवतार सिंह कालकाजी
40 श्री नारायण दत्त शर्मा
41 श्री अमानतुल्लाह खान
42 श्री राजू धिंगान
43 श्री मनोज कुमार
44 श्री नितिन त्यागी
45 श्री एस. के. बग्गा
46 श्री अनिल कुमार बाजपेयी
47 श्री राजेंद्र पाल गौतम
48 श्रीमती सरिता सिंह
49 मो. इशराक
50 श्री श्रीदत्त शर्मा
51 चौ. फतेह सिंह
52 श्री जगदीश प्रधान

दिल्ली विधान सभा

की

कार्यवाही

सत्र-04 भाग (5) मंगलवार, 15 नवम्बर, 2016/24 कार्तिक, 1938 (शक) अंक-41

सदन अपराह्न 2.05 बजे समवेत हुआ।

माननीय अध्यक्ष महोदय **(श्री राम निवास गोयल)** *पीठासीन हुए।*

(राष्ट्रीय गीत-वन्देमातरम)

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्यगण, छठी विधन सभा के चौथे सत्र के पांचवें भाग में आप सबका हार्दिक स्वागत है। आशा है, आप सदन के समय का पूर्ण सदुपयोग करते हुए कार्यवाही में भाग लेंगे तथा शांतिपूर्वक सदन चलाने में मुझे पूरा सहयोग करेंगे। धन्यवाद। हां मनीष जी।

शोक संवेदना

उप मुख्यमंत्री (श्री मनीष सिसौदिया) : अध्यक्ष महोदय, मैं सदन के समक्ष एक स्थिति रखना चाहता हूं। उससे पहले कि हम बाकी विषय पर जायें जिसके लिए मीटिंग बुलायी है, देश में अभी पच्चीस लोग ए. टी. एम. और बैंक की लाईन में लगे, मरे हैं, पिछले तीन-चार दिन में। इस सदन में हमारी परंपरा रही है कि जब भी कोई व्यक्ति हादसे में मरता है, जाने माने लोगों की मौत होती है...

श्री विजेन्द्र गुप्ता : प्रूफ दिये जायें।

उप मुख्यमंत्री : तो सदन से जुड़े कोई बात होती है तो हम संवेदना....

अध्यक्ष महोदय : एक सेकेंड विजेन्द्र जी, एक सेकेंड मेरी बात सुनिये।

उप मुख्यमंत्री : किसी ऐसे हालात में हुई मृत्यु, ये है सबूत। है, सबूत है। सबके सबूत हैं।

अध्यक्ष महोदय : पच्चीस लोगों की मृत्यु हुई है।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : ये***[1] बोल रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय : मनीष जी, एक सेकेंड, एक सेकेंड। विजेन्द्र जी, एक सेकेंड मेरी बात सुनिये। डिप्टी सी. एम. कोई बात सदन में....नहीं, मेरी बात सुन लीजिए।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : नहीं ऐसे नहीं। आप ये शब्द निकालिये। ये*** बोल रहे हैं। ये शब्द कार्यवाही से निकाल दीजिये।*** बोल रहे हैं।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : नहीं आप विजेन्द्र जी, हर बात के लिये....आपके पास कानूनी अधिकार है, उसका इस्तेमाल करिये।

उप मुख्यमंत्री : अध्यक्ष महोदय सदन में लेके आये हैं। सदन में लेके आये हैं अध्यक्ष महोदय!

अध्यक्ष महोदय : वो सबूत लेके आये हैं!

---

[1] *** चिह्नित अंश अध्यक्ष महोदय के आदेशानुसार सदन की कार्यवाही से निकाला गया।

...(व्यवधान)

उप मुख्यमंत्री : पच्चीस लोगों की मौत हुई है, लाईन में लगके बैंकों की, एटीएम की लाईन में।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आपको लगता है कि अगर वो गलतबयानी कर रहे हैं, आप इसका जवाब दीजिए। ये कोई तरीका नहीं है। आप बैठ जाइये। ये विजेन्द्र गुप्ता जी के शब्द कार्यवाही से निकालिये।

उप मुख्यमंत्री : अध्यक्ष महोदय, इस सदन में हमेशा मानवता के प्रति संवेदना दिखाते हुए हमेशा शोक संवेदना व्यक्त की है। मेरा सदन में प्रस्ताव है कि इससे पहले कि हम सदन की कार्यवाही आगे शुरू करें, 25 लोगों की मौत के प्रति हम दो मिनट का मौन रखें। हम दो मिनट उनके परिवार को सांत्वना के लिए, शक्ति के लिए मौन रखें।

(प्रस्ताव के विरोध में भारतीय जनता पार्टी के दोनों सदस्यों द्वारा सदन से बहिर्गमन)

अध्यक्ष महोदय : मैं डिप्टी सी. एम. साहब के इस प्रस्ताव को स्वीकार करता हूं। दो मिनट रूक जाइये। हम सभी उन दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए दो मिनट का मौन रखें।

(सदन द्वारा दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए दो मिनट का मौन रखा गया।)

...(व्यवधान)

(भारतीय जनता पार्टी के दोनों सदस्यों का सदन में आगमन)

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : विजेन्द्र जी, आप दो मिनट रूक जाइये शांति से। मुझे नियम 90 के अंतर्गत माननीय मुख्यमंत्री श्री अरविंद केजरीवाल जी का एक संकल्प प्राप्त हुआ है। मैं माननीय मुख्यमंत्री जी से प्रार्थना कर रहा हूं कि वो अपना संकल्प प्रस्तुत करें।

...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष द्वारा व्यवस्था

अध्यक्ष महोदय : मुझे संकल्प प्राप्त हुआ है। दो मिनट रूक जाइये। मैं उस पर व्यवस्था दे रहा हूं। विजेन्द्र जी द्वारा मुझे नियम 114 के अंतर्गत एक बधाई प्रस्ताव की सूचना प्राप्त हुई है। मैं पढ़के सुना देता हूं। दो मिनट रूकिये जरा।

मैं इस संबंध में माननीय नेता प्रतिपक्ष को बताना चाहूंगा कि आज एक महत्वपूर्ण सरकारी संकल्प सूचीबद्ध है और यह विशेष सत्र उसी के लिए बुलाया गया है। पूरा देश इस समय नोटबंदी के कारण उत्पन्न विभिन्न समस्याओं से जूझ रहा है और आम जनता की दिनचर्या पर इसका प्रतिकूल प्रभाव भी पड़ रहा है। सदन की विशेष बैठक में...एक सेकेंड मेरी बात सुन लीजिए पूरी। मैं नियम-114 पढ़ रहा हूं। मैं उस पर व्यवस्था पढ़ रहा हूं। आप उस व्यवस्था को सुन नहीं रहे हैं। आप कुछ परेशान सा, बेचैन सा हो रहे हें। मुझे ऐसा लग रहा है। यह बैठक उस पर विचार करने के लिए बुलायी गयी है। श्री विजेन्द्र गुप्ता जी संकल्प पर चर्चा के दौरान अपने विचार व्यक्त कर सकते

हैं। संकल्प भी यही है। मेरी बात सुन लीजिए। एक सेकेंड मैंने पढ़ लिया है सारा। आपका पढ़ लिया है पूरा प्रस्ताव। मुझे मालूम है विजेन्द्र जी। ऐसा है, वो मैं पढ़ चुका हूं। आप धन्यवाद का प्रस्ताव रख सकते हैं।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : विजेन्द्र जी देखिये एक सेकेंड मेरी पूरी बात सुन लीजिए एक बार। आपने पूरा सुना नहीं। ये बात मैं स्वीकार करता हूं कि कोई भी धन्यवाद का प्रस्ताव बिना सूचना दिये सदन के में उठाया जा सकता है लेकिन उसी विषय पर मैंने ये कहा है कि उसी विषय पर सदन बुलाया गया है। सदन में चर्चा है आज। मेरी बात समझे न जी? तो उसमें जब आपकी बारी आयेगी बोलने की, आप उस बारे में अलग से...दोनों चीजें हैं; बधाई प्रस्ताव है आपका। मैं मना नहीं कर रहा हूं। आपको कह रहा हूं। आप उसी व्यवस्था में चर्चा करिये देखिये विजेन्द्र जी, मैंने व्यवस्था दी है। ये पढ़ने की जरूरत नहीं है। मुझे मालूम है सारा। मैं आपसे आग्रह कर रहा हूं, रूलिंग दे रहा हूं। दोनों बात कर रहा हूं कि आपका जब समय आयेगा बोलने का, उसमें जो मर्जी आये, आप बोलिये। कोई रोक थोड़ी न रहा है आपको! विषय वही है।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : नहीं, मैंने व्यवस्था दे दी है। मैंने कहा कि मैं इसको स्वीकार नहीं कर रहा हूं। चलिए, माननीय मुख्यमंत्री जी....और यह विषय सत्र उसी के लिए बुलाया गया है। पूरा देश इस समय नोटबंदी के कारण उत्पन्न समस्याओं से जूझ रहा है और आम जनता की दिनचर्या पर इसका प्रतिकूल प्रभाव भी पड़ रहा है। एक सैकेंड मेरी बात सुन लीजिए पूरी।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : आप उसे पढ़ रहे हैं?

अध्यक्ष महोदय : मैं नियम-114 पढ़ रहा हूं। मैं आपके नोटिस पर व्यवस्था पढ़ रहा हूं, आप उस व्यवस्था को सुन नहीं रहे हैं, कुछ परेशान सा, बेचैन हो रहे हैं, मुझे ऐसा लग रहा है। सदन की यह विशेष बैठक उस पर विचार करने के लिए बुलाई गई है। श्री विजेन्द्र गुप्ता जी संकल्प पर चर्चा के दौरान अपने विचार व्यक्त कर सकते हैं। संकल्प भी यही है।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : अध्यक्ष जी, ...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मेरी बात सुन लीजिए।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : एक सैकेंड मैंने पढ़ लिया है सारा। आपका पढ़ लिया है पूरा प्रस्ताव। मुझे मालूम है विजेन्द्र जी।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : अध्यक्ष जी, नियम कहता है बिना सूचना दिए प्रस्ताव

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : ऐसा है, वो मैं पढ़ चुका हूं। आप धन्यवाद का प्रस्ताव रख सकते हैं।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : मुझे अपनी बात तो कहने दीजिए।

अध्यक्ष महोदय : मेरी पूरी बात सुन लीजिए एक बार। आपने पूरा सुना नहीं। यह बात मैं स्वीकार करता हूं कि कोई भी धन्यवाद का प्रस्ताव बिना सूचना दिए सदन के अंदर भी उठाया जा सकता है लेकिन मैंने यह कहा है कि उसी विषय सदन बुलाया गया है, चर्चा है आज। मेरी बात समझे ना जी? तो उसमें जब आपकी बारी आएगी बोलने की।

...(व्यवधान)

श्री विजेन्द्र गुप्ता : अध्यक्ष जी, नियम-114 में संवेदना है या बधाई प्रस्ताव?

अध्यक्ष महोदय : दोनों चीजें हैं।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : मेरा बधाई प्रस्ताव है।

अध्यक्ष महोदय : बधाई प्रस्ताव है आपका, मैं मना नहीं कर रहा। मैं कह रहा हूं कि उसी व्यवस्था में चर्चा करिये आप।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : अध्यक्ष जी, यह बधाई जो है वो नियम-114 में ही दी जाती है...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : देखिये, विजेन्द्र जी, मैंने व्यवस्था दी है, यह पढ़ने की जरूरत नहीं है, मुझे मालूम है सारा।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : हम बधाई देना चाहते हैं।

अध्यक्ष महोदय : मैं आपसे आग्रह कर रहा हूं, रूलिंग दे रहा हूं, दोनों बात कर रहा हूं। आपका जब समय आएगा बोलने का, उसमें आप जो मर्जी आए बोलिये, कोई रोक थोड़े ही रहा है आपको। विषय वही है।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : अध्यक्ष जी, यह बधाई प्रस्ताव है। उसको आप एक्सेप्ट कर रहे हैं, मना कर रहे हैं, क्या कर रहे हैं?

अध्यक्ष महोदय : मैंने व्यवस्था दे दी है, मैंने कहा है कि मैं इसको स्वीकार नहीं कर रहा।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : बधाई दी जानी चाहिए, देश में इतना बड़ा काम हुआ है...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : चलिये, माननीय मुख्यमंत्री जी।

मुख्यमंत्री : माननीय अध्यक्ष महोदय...(व्यवधान)

श्री विजेन्द्र गुप्ता : मेरा प्वाइंट ऑर्डर है मुख्यमंत्री जी के प्रस्ताव पर। यह देखिये, रूल-93 कंडीशन्स ऑफ एडमिनिसिबिल्टी ऑफ रिजोल्यूशन्स। यह मेरा प्वाइंट ऑफ आर्डर है क्योंकि इसमें जो कंडीशन्स हैं; रूल 90 में जो प्रस्ताव लाया जायेगा, वो मैं बताना चाहता हूं, वो ऑब्जेक्शनेबल है।

अध्यक्ष महोदय : रूल 90 में आप क्या बताना चाह रहे हैं, आप बताइये?

श्री विजेन्द्र गुप्ता : अध्यक्ष जी, किताब तो खोलिये ना।

अध्यक्ष महोदय : आप पढ़ दीजिए।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : रूल-93 में कोई भी संकल्प जो आप एक्सेप्ट कर रहे हैं, उसमें अगर कोई ऑब्जेक्शन है तो पहले उसको सैटल करिये।

अध्यक्ष महोदय : किस पर ऑब्जेक्शन है?

श्री विजेन्द्र गुप्ता : रूल-90 में जो प्रस्ताव लाया गया है। जो कॉपी हमें दी गई है, उसको आप पढ़ लीजिये।

अध्यक्ष महोदय : आपका किसपर ऑब्जेक्शन है?

श्री विजेन्द्र गुप्ता : संकल्प की ग्राह्यता की शर्तें।

अध्यक्ष महोदय : हां, बताइये, कौन से पर ऑब्जेक्शन है आपका?

श्री विजेन्द्र गुप्ता : अध्यक्ष जी, इसमें 90 (3) है उसमें तर्क-वितर्क, अनुमान, व्यंग्यात्मक पद, लांछन आरोप या मानहानिकारक कथन नहीं होंगे। यह

इसमें आता है और इसके अंदर जो प्रस्ताव अभी टेबल पर दिया गया है, यह प्रस्ताव वास्तविकता में तो सात दिन पहले आना चाहिए था लेकिन 48 घंटे पहले सदस्यों को मिलना चाहिए था लेकिन अगर 48 घंटे नहीं तो सुबह...

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :विजेन्द्र जी, आपातकाल में सदन कभी भी बुलाया जा सकता है। किसी भी विषय को लेकर बुलाया जा सकता है।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : मैं जानता हूं यह आपातकाल क्योंकि,... क्योंकि तीन बजे इलैक्शन कमीशन में डेट थी, वो हमें मालूम है।

अध्यक्ष महोदय : कोई बात नहीं, ठीक है।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : लेकिन अब जो मैं बात पढ़ रहा हूं, जो मेरा ऑब्जेक्शन है, वो मैं बता रहा हूं। नियम-93 में जो मुख्यमंत्री जी के प्रस्ताव में लांछन, आरोप लगाए गए हैं प्रधानमंत्री जी के ऊपर वो प्रस्ताव का हिस्सा नहीं हो सकते, इसलिए यह प्रस्ताव निरस्त होना चाहिए। यह रूल 93 (3) कहता है और वो जो आरोप है वो मैं इसमें पढ़कर बता सकता हूं, कहां-कहां पर आरोप है।

अध्यक्ष महोदय : इसमें कहीं भी...पूरा मैंने पढ़ा है।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : मैं पढ़ देता हूं, न, जहां-जहां आरोप है। यहां आरोप है कि प्रधानमंत्री द्वारा 8 नवंबर को जो प्रस्ताव लाया गया है, जो घोषणा की गई वो विनाशकारी...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : विजेन्द्र जी, मेरी बात सुनिये। मैं सारा पढ़ चुका हूं, सारा देख चुका हूं। इसमें कहीं किसी पर भी लांछन या आरोप नहीं लगा है।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : लांछन, आरोप मेरा आरोप यह है कि यह विनाशकारी है। रहस्यमयी विमुद्रीकरण योजना और...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : यह लोकतंत्र है।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : यह कुनियोजित है, अवैज्ञानिक है विमुद्रीकरण योजना ...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : विजेन्द्र जी, यह लांछन नहीं है।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : यह आरोप नहीं है?

अध्यक्ष महोदय : यह आरोप नहीं है।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : असंवेदनशील ढंग से।

अध्यक्ष महोदय : यह आरोप नहीं है।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : यह आरोप नहीं है।

अध्यक्ष महोदय : आप बैठिए। माननीय मुख्यमंत्री जी।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : अध्यक्ष जी, देखिये, आप कानून की अवहेलना कर रहे हैं...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मैं पूरा पढ़ चुका हूं। इसमें कहीं आरोप नहीं है।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आप बैठिए। आरोप तो अभी आपने लगा दिया कि सदन में झूठ बोल रहे हैं। विजेन्द्र जी, आप बैठिए प्लीज। जब मैं बोल रहा हूं, आप बैठिए।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : अध्यक्ष जी, मैं ऑब्जेक्शन कर रहा हूं।

अध्यक्ष महोदय : मैं ओवररूल कर रहा हूं इसको। आप बैठ जाइये प्लीज। आपका सुन लिया मैंने। आप यही बात कह रहे हैं, शांति से समझ लीजिए कि इसमें लांछन, आरोप है।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : आरोप जो लगाए गए हैं।

अध्यक्ष महोदय : इसमें कहीं कोई आरोप शब्द या लांछन का नहीं है। मैंने देख लिया है सारा। मैं ऑलरेडी देख चुका हूं।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : असंवेदनशील ढंग से, यह आरोप नहीं है, विनाशकारी है।...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : असंवेदनशील क्या आरोप हो गया? आरोप तो वो था जो लगाया आपने माननीय उप मुख्यमंत्री पर कि आप झूठ बोल रहे हैं। यह आरोप है। आपने लगाया, इसे आरोप बोलते हैं।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : ऐसा है, मैं ऑन रिकार्ड कह रहा हूं। आप निकलवाइये मत रिकार्ड से। 25 लोगों की सूची दीजिए आप।

अध्यक्ष महोदय : आपके पास राइट है ना, आप कमेटी को इन्फॉर्म करियेगा।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : इस प्रकार गलत भाषा में और वो भी एक स्टेट की मुख्यमंत्री दे रहा है, इससे शर्म की बात नहीं हो सकती!

संकल्प (नियम-90)

अध्यक्ष महोदय : चलिये, माननीय मुख्यमंत्री जी।

मुख्यमंत्री : माननीय अध्यक्ष महोदय, आज यह सत्र बहुत ही इमरजेंसी की जो कंडीशन पूरी दिल्ली के अंदर पैदा हो गई है, पूरे देश के अंदर और दिल्ली के अंदर और दिल्ली के अंदर, उसके लिए बुलाया गया है। 8 नवंबर को माननीय प्रधानमंत्री जी ने रात को 8 बजे ऐलान किया था कि कालेध न के खिलाफ वो एक युद्ध छेड़ रहे हैं। उसके तहत् उन्होंने ऐलान किया कि 500-500 और 1000-000 के नोट 8 नवंबर की रात से मान्य होने बंद हो जाएंगे, अमान्य हो जाएंगे। हम लोग जितने यहां बैठे हुए हैं, सब लोग भ्रष्टाचार के खिलाफ इस देश के...जो आजादी के बाद सबसे बड़ा आंदोलन हुआ, उसमें से निकले हुए लोग हैं, यहां पर बैठे हुए 90-95 परसेंट लोग कभी चुनाव भी नहीं लड़े थे, पहली बार आए हैं हम लोग। हमें राजनीति आती नहीं थी, आप ही लोगों से सीखी है राजनीति हम लोगों ने। अध्यक्ष महोदय, अगर भ्रष्टाचार के खिलाफ कोई भी देश के अंदर सार्थक और इफेक्टिव कदम उठाया जायेगा, सबसे आगे आप हम लोगों को पाएंगे, सबसे आगे आप आम आदमी पार्टी के लोगों को पाएंगे, सबसे आगे दिल्ली सरकार को पाएंगे आप। इस देश के अंदर ऐसे बड़े-बड़े लोग हैं राबर्ट वाड्रा...इन लोगों का नाम लेने से भी जब डरा करते थे, उन लोगों के भ्रष्टाचार के कागज हम लोगों ने देश के सामने रखे थे, अपनी जान दांव पर लगाकर हम लोगों ने भ्रष्टाचार की लड़ाई लड़ी है और हम सकारात्मक राजनीति करते हैं केवल। दूसरी पार्टी की सरकार अगर अच्छा काम करे तो उसकी तारीफ करते हैं। स्वच्छ भारत अभियान हुआ, सबसे पहले हम लोग झाड़ू लेकर निकले थे, हमने प्रधानमंत्री जी की तारीफ की थी। येागा-डे हुआ, हम लोग अपनी-अपनी चटाई लेकर

इंडिया गेट पहुंचे थे, प्रधानमंत्री जी की तारीफ की थी, सर्जिकल स्ट्राइक हुई, हम लोगों ने प्रधानमंत्री जी को सेल्यूट किया था। यह जो कदम है 500-500 और 1000-1000 रूपये के नोट बंद करके दो-दो हजार रूपये के नोट चालू करने से और अब तो कह रहे हैं कि पांच-पांच हजार रूपये के नोट लेकर आएंगे! इससे भ्रष्टाचार कैसे दूर होगा, यह समझ के परे हैं। यह तो भ्रष्टाचारियों को सहूलियत देने का एक तरह से पूरा प्रोग्राम बनाया जा रहा है कि भई, पहले एक लाख रूपये की रिश्वत देने जाते थे तो हजार-हजार रूपये के 100 नोट लेकर जाने पड़ते थे, बड़ी तकलीफ होती थी पैसे लेकर जाने में। सौ नोट आते नहीं थे जेब में। अब 50 ही नोट लेकर जाने पड़ेंगे, चिंता की बात नहीं है। किसी ने अगर घर में 100 करोड़ रुपये कालाधन रख रखा था हजार-हजार के नोटों में अब उतनी जगह में दो सौ करोड़ रूपये आ जाएगा दो-दो हजार के नोटों में। तो यह कालाधन कैसे खत्म होगा इससे, यह बिल्कुल समझ नहीं आ रहा। कालाधन खत्म ही करना था तो इस देश में बहुत बड़े-बड़े लोग हैं और केंद्र सरकार को पता है कि किस-किस के पास कालाधन है। उनके ऊपर करते ना स्ट्राइक! सारे सवा सौ करोड़ लोगों को देश में लाइन में लगाने से काला धन कैसे खत्म होगा, ये समझ से परे है। लोगों की गाढ़ी कमाई थी, जो लोगों ने बैंकों में जमा कर रखी थी। अब अपनी खुद की कमाई, खुद के पैसे बैंक से निकलवाने के लिए लोग लंबी-लंबी लाइन, सारी-सारी रात लोग लाइन में लगे हुए हैं और उसमें सारी पार्टियों के, बीजेपी वाले भी लाइनों में लगे हुए हैं, कांग्रेस वाले भी लाइनों में लगे हुए हैं। आम आदमी पार्टी वाले भी लाइनों में लगे हुए हैं। बड़े लोग नहीं हैं बस लाइनों में, जो इनके दोस्त हैं, बड़े लोगों के दोस्त हैं। पूरी दिल्ली के अंदर अफरातफरी मची हुई है मैं, उप-मुख्यमंत्री जी, हमारे दूसरे मंत्रीगण, विधायकगण लगातार जनता के टच में हैं, मैं खुद गया था आजादपुर मंडी गया था, लक्ष्मीनगर मार्किट

गया था, गांधी नगर मार्किट गया था। कई-कई दिनों से चार-चार, पांच-पांच दिनों से दुकानें खुली नहीं हैं। ये कई सारी ऐसी मार्किटें हैं जहां सारा काम कैश में होता है, कैश का मतलब ये नहीं कि दो नंबर का होता है। अब आजादपुर मंडी में कोई किसान अपनी सब्जी लेकर आयेगा, वो अपनी सब्जी बेचता है कैश ले जाता है। आढ़ती जो खरीदता है फिर आगे रिटेलर को, रेहड़ी वालों को बेच देता है सब्जी वो भी कैश में बेचता है लेकिन साल के अंत में किसान की इन्कम...एग्रीकल्चर इनकम है, वो टैक्स फ्री है, वो ब्लैकमनी नहीं है। आढ़ती अपनी इन्कम टैक्स की रिटर्न फाइल करता है लेकिन कैश में काम कर रहे हैं, वो अलाउड है, कानून में अलाउड है तो वो दो नंबर की इनकम कैसे हो गई! अब अचानक जब इन्होंने पांच सौ, पांच सौ हजार-हजार के नोट बंदकर दिये तो ट्रकों की लाइनें लगी पड़ी है दिल्ली के बाहर, वो क्या करें! ट्रांसपोर्टर अपने ड्राईवर को पेमेंट करता है, कैश में करता है। एक ट्रक चलता है, रास्ते में ड्राईवर को रोटी खानी होती है कैश में देता है वो, चैक से थोड़ी देगा। ट्रक खराब हो जाये, उसकी मरम्मत कैश में होती है। डीजल के पैसे कैश में देते हैं। नाके के ऊपर पैसे कैश में देते हैं। अब अगर ट्रांसपोर्ट बंद हो जायेगा, सब्जी आनी बंद हो जायेगी, फल आने बंद हो जायेंगे... बहुत सारे लोग ऐसे है। जिनके पास थोड़ा बहुत उनके घर में कैश था, सारा खत्म हो गया। अब उनके बच्चों के लिए खाने को नही बचा। किसान अपनी बुआई नहीं कर पा रहे, किसान खाद कैसे खरीदे अब, किसान बीज कैसे खरीदे अब, तो ये बहुत ही इमरजेंसी की सिचुएशन आ गई है जिसके ऊपर चर्चा करने के लिए आज मैं एक प्रस्ताव सदन के समक्ष रख रहा हूं,

The Legislative Assembly of NCT of Delhi having its sitting in Delhi on 15 November, 2016.

"Noting with anger and anguish that the Hon'ble Prime Minister of India has delivered a huge blow to the common people and economy of India through his address to the nation on 08 Novemeber, 2016 at 8 pm;

Condemning the way in which the decision to implement the devastating and mysterious demonetization shceme was taken in a most non-transparent and undermocratic manner;

Experssing shock over the way in which the Government of India sought to impose upon the nation its ill-conceived, unscientific and draconian scheme which has turned crores and crores of honest Indians into helpless victims;

Denouncing the stubbornness being displayed by the Hon'ble Prime Minister in going ahead with implementation of the scheme in a most insensitive manner knowing fully well that he has unleashed untold misery in the lives of honest and hardworking Indians;

Censuring the political leadership of the Government of India for perpetuating rank incompetence in spite of 10 months long preparation as was claimed by the Hon'ble Prime Minister - leading to lethal consequences for the economy and honest people of the country;

Deploring the Hon'ble Prime Minister for punishing the common people of India instead of fulfilling his promise of brining back black money lodged in the foreign banks;

Condoling the loss of lives of honest Indians while struggling for hours together in unending queues to get back just a few hundred rupees of their own hard earned money through bakns and ATMs;

Warning the Prime Minister not to insult the common people standing in serpentine queues at Banks and ATMs by calling them corrupt;

Sympathising with all those innocent Indians who have been going through most agonizing times for no fault of theirs;

Sharing the sorrow of mothers who are unable to feed their children;

Grieving with those who lost their near and dear ones due to refusal of treatment by hospitals on account of valid legal tender suddenly being declared invalid by Hon'ble Prime Minister;

Resolves to urge upon Hon'ble President of India to direct the Government of India to withdraw at once the draconian demoneitzation scheme and to take necessary steps to institute a high level probe to be monitored by Hon'ble Supreme Court of India to look into the allegations that the scheme is a fraud on he nation and that is has been launched to benefit a particular political party through its agents in black money market."

अध्यक्ष महोदय : अब माननीय अन्य सदस्य भी चर्चा में भाग ले सकते हैं, श्री सौरभ भारद्वाज अमानतुल्लाह जी।

श्री अमानतुल्लाह खान : अध्यक्ष महोदय, मैं आपका तहे दिल से शुक्रिया अदा करता हूं कि आपने मुझे नोटबंदी के इस अहम मुद्दे पर बोलने की इजाजत दी। 8 नवंबर को जो ये फैसला आया कि जो पांच सौ और एक हजार के नोट हैं। ये रात को बारह बजे तक मान्य हैं, उसके बाद ये अमान्य हो जायेंगे। उसके बाद से पूरे हिंदुस्तान में एक अफरातफरी का माहौल क्रिएट हो गया हैं। हम लोग आज जब घर से निकले तो रास्ते में कई बैंक पड़ते हैं। बैंकों में देखा कि दो-तीन दिन तक तो लोगों ने ये वेट किया कि

90 प्रतिशत लोग थे जो ये इंतजार कर रहे थे कि भीड़ कम होगी तब हम जायेंगे लेकिन ऐसा नहीं हुआ तो उनको आज मजबूरन निकलना पड़ा। हजारों लोग लाइनों में लगे हुए हैं। एक लाइन जेन्ट्स की है तो एक लाइन लेडीज की है तो एक लाइन जो है सीनियर सिटीजन की है और वो लाइन में लगे हुए हैं। शाम को को नंबर आते आते होता है कि कैश खत्म हो गया, जहां चार हजार की लिमिट रखी गई थी, वहां हर बैंक दो हजार से ज्यादा नहीं दे रहा है। बैंकों से पूछा गया तो वो कह रहे हैं कि दो हजार रूपये सबको दे दें, इतना भी पैसा हमारे पास नहीं आता। कोई बैंक कहता है कि पंद्रह हजार रूपये आते हैं। कोई बैंक कहता है कि हमारे पास पंद्रह लाख आते हैं, कोई बैंक कहता है बीस लाख आते हैं। इससे ज्यादा लोग नहीं आ रहे हैं। सवा सौ करोड़ लोग, बैंकों में जाना है, नया पैसा लाना है और उसके बाद काम अपना शुरू करना है। जो दुकानें हैं, दुकानों में जो सौदा था, वो खत्म हो गया; चावल खत्म हो गया, दाल खत्म हो गई, चीनी खत्म हो गई, पीछे नमक की एक अफवाह उड़ी थी कि नमक खत्म हो गया, उसके बाद कई जगहों पर छुटमुट झगड़ा भी हुआ, ओखला में भी झगड़ा हुआ तो ये सारी चीजें... आज पूरे हालात ये पैदा हो गये हैं। दुकानदार से हमने पूछा कि भई, दुकान में आपका सामान क्यों नहीं है? दुकान में सामान इसलिए नहीं है क्योंकि हमारा जो सारा काम है, वो कैश से होता है। हम लोग होलसेलर से, जो थोक वाले हैं, उनसे हम माल लाते हैं। वो हमको माल दे नहीं रहे हैं। वो माल क्यों नहीं देर हे हैं? कहते हैं जी, चैक से कहां हम पैसा दें? हमारे पास पैसा है नहीं। आज चार हजार रूपये भी हमसे बदले नहीं जा रहे तो हमें वो उधार पैसा देंगे नहीं, उधार में माल देंगे नहीं तो हमारे पास देने के लिये है नहीं। आज ये हालात सब जगह आ गये। न जाने कितने सारे

लोग ऐसे हैं जो बैंकों की लाइन में सुबह से लगे हुए हैं, पैसा अपना लेकर आते हैं। उसके बाद वो दुकान जाते हैं, दुकान पर उनको सौदा नहीं मिलता। अगर कहीं दुकान पर सौदा मिलता है तो दो हजार का नोट कोई बदलने को तैयार नहीं है। तो एक सिचुएशन आज पूरे हिंदुस्तान में ये बनी हुई है, दिल्ली में सिचुएशन बनी हुई है। मेरे पास आज सुबह एक महिला आई कि मेरी बच्ची की शादी है बीस तारीख को, मेरे पास पैसे नहीं हैं। आप ये बताओ कि मैं कैसे शादी करूं अपनी बच्ची की? तो मैंने कहा भई, आप लाइन में लग जाओ चार हजार रूपये वहां मिल रहे हैं। कहने लगे कि तीन दिन से लगातार मैं लाइन में लग रही हूं। मैं वहां तक पहुंचती नहीं हूं, उससे पहले बैंक बंद हो जाता है या मुझसे ये कह दिया जाता है कि कैश खत्म हो गया। बीस तरीख को मेरी बच्ची की शादी है। आप कुछ मेरी मदद कर दो कि मैं इतना तो कर दूं कि कुछ सामान खरीद लूं। ऐसे हालात आ गये कि शादी लोग नहीं कर रहे हैं। अभी एक वीडियो वायरल हो रहा है वट्सएप पर। मेरे पास भी एक वीडियो आया कि एक बच्ची की शादी थी एक हफ्ते बाद। वो ऊपर खड़ी हुई, सात मंजिल से कूद गई और उसने अपनी जान दे दी। ये एक वायरल हुई है वीडियो। कल मेरे पास आई। मुझे बड़ा दुख हुआ उसको देखकर। बड़े लोग अस्पतालों में जा रहे हैं, जेटली जी ने कह दिया कि जी, जो प्राइवेट हॉस्पिटल हैं, वहां चैक से आप भुगतान करें तो क्योंकि जेटली जी ते एक बड़े अमीर आदमी हैं। उन्हें तो पता नहीं है कि अगर किसी आदमी ने वहां पर अपना इलाज कराया तो वो चैक से कैसे पेमेंट कर सकता है। एक आदमी बंगाल से आया, बिहार से आया या आसाम से आया, उसने अपने पेशेंट को एडमिट किया, पेशेंट का इलाज हुआ, उसके बाद चैक कैसे ले लेगा कोई भी हॉस्पिटल, चैक लेने के लिए वो मना कर रहे हैं। कहते हैं भई, आप

तीन दिन का पैसा और दे दो या एक हफ्ते का पैसा दे दो जब आपकी क्लियरेंस आ जायेगी, तब आपको हम यहां से जो है... ठीक आपको पेशेंट हो गया है, एक हफ्ते के बाद हम उसको भेजेंगे। तो ये ऐसे हालात आ गये और जेटली जी ने तो कह दिया कि चैक से ले लो भई! उनके यहां तो कोई मरेगा नहीं। एक पेशेंट क्रिटिकल कंडीशन में था, उसकी मौत हो गई। वो वहां पर उसकी डेड बॉडी रखी हुई है। अस्पताल वाले कह रहे हैं कि पैसे लेकर आओ। वो कहता है कि पैसे मेरे पास नहीं हैं, मेरे पास तो चैक है। वो कहते हैं कि चैक का हम क्या करेंगे? साहब, एक हफ्ता लगेगा चैक क्लियर होने में। आप तो बंगाल से हैं। बंगाल से क्लिजयरेंस एक हफ्ते में लगेगी तो एक हफ्ते तक क्या वो जो बॉडी है, उसकी डेड बॉडी को अस्पताल में रखें? ये ऐसे हालात आ गये हैं मुल्क के अंदर। समझ में नहीं आ रहा। कोई भी आज सब्जी लेकर आता है, मंडी के अंदर सब्जी वाला किसान आदमी है वो। किसान अब से पहले कैश लेकर जाता था, किसान पर तो कहीं इनकम टैक्स नहीं है। किसान के ऊपर से टैक्स है ही नहीं, फ्री है। तो वो मंडी के अंदर आता है तो उससे वो कहता है कि साहब, हमारे पास कैश नहीं है। हमसे चैक ले लो तो आज किसान ये कहता है कि इस बात की गारंटी ही नहीं है मुझे कि ये चैक क्लीयर होगा या नहीं होगा। तो सब्जी वापस लेकर चला जाता है। जिस वजह से मंडियों के अंदर सब्जी आना बंद हो गई। वहां पर रिटेलर जो है, जा रहा है। उसको पेमेंट देने के लिए तैयार नहीं हैं। तो ये पूरे मुल्क के अंदर एक हालात पैदा हो गये हैं। लोग आज भूखे मर रहे हैं, लाइनों में लगे हुए हैं। मेरे पास आज सुबह चार लोग आये। चार मजदूर थे जो राज मिस्त्री का काम करते हैं। कहते हैं कि एक हफ्ते से हमारे पास कोई काम नहीं है। हमारे बच्चे भूखे हैं, हमें उनके खाने

के लिये कुछ दे दो। तो हमारे पास भी कुछ नहीं है। हम भी बैंक में लगते हैं, हमारा भी नंबर नहीं आता। तो आज ये हालात पैदा हो गये हैं। क्या दिखाना चाहते थे ये नरेंद्र मोी जी? नरेंद्र मोदी जी ने जो आज कहा कि जो भी पैसा हो, वो सारा ब्लैक मनी है। बैंक का जो भी पैसा है, वो सारा लीगल है। उन्होंने कहा कि तीन दिन के अंदर बैंकों के अंदर जो पैसा जमा हुआ है, वहां से निकाला गया। ढाई लाख करोड़ रूपया बैंक के अंदर जमा हो गया। अब से पहले इनके दस लोग हैं जो दस बड़े-बड़े सेठ हैं। जो इनके दोस्त हैं, उनके ऊपर साढ़े आठ लाख करोड़ रूपया बकाया है बैंकों का, आप उसी को निकाल लेते। ये नौबत तो नहीं आती। आज वो कह रहे हैं... कल मैंने सुना टीवी पर लोग कह रहे हैं, इन्हीं के जो लोग हैं, बीजेपी के लोग बैठ रहे हैं वहां पर। कह रहे हैं कि देखो जी, अब तीन दिन के अंदर तीन लाख करोड़ रूपया आ गया। अब हम आगे लोन दे सकते हैं और ये लोन किसको देंगे? उन्हीं लोगों को जिनके पास साढ़े आठ लाख करोड़ पहले से हैं। हमारी हलाल की कमाई है। हम इन्कम टैक्स देते हैं। आपने कहा कि बैंक के अंदर पैसा जमा करो। हमने जमा कर दिया तो क्या आप इसको लोन में दे दोगे? आपने कंडीशन लगा दी कि आप चार हजार से ज्यादा ले नहीं सकते। चार भी नहीं मिल रहा, दो मिल रहा है। वो भी लंबी लाईनें हैं तो जो मेरा अपना पैसा है, जिस पर मैं टैक्स देता हूं, वो आप कैसे आगे लोन में दे सकते हो? तो ये एक चीज है। हमारी कुछ समझ में नहीं आ रहा कि नरेंद्र मोदी जी ने ये फैसला क्यों लिया, किसको बचाने के लिए ये फैसला लिया? आप जब इलैक्शन जीत कर आये थे, इलैक्शन जीतने के बाद आपने कहा था कि सौ दिन का मुझे टाईम दे दो, जो भी स्विस बैंक के अंदर जो भी ब्लैक मनी है, उसको मैं निकाल कर लाऊंगा। आप वहां से तो निकाल कर लाये नहीं,

आप ने यहां पर जो लोगों की जो हलाल की कमाई थी, जो जायज कमाई थी, जो मेहनत की कमाई थी, आपने उसको निकालना शुरू कर दिया। अभी अरविंद जी ने कहा कि कैश का जो कारोबार है, वो कहां से इल्लीगल हो गया? कहां से वो काला काम हो गया? कहां से वो कालाबाजारी हो गई? वो तो कैश में काम करने की इजाजत है। अगर ये दो हजार के नोट भी आयेंगे तो ये भी कैश में ही लोगों को देंगे। तो अब से पहले का पैसा, कैसे हो गया वो नाजायज! और ये सारी चीजें आजपूरे मुल्क के अंदर है। मुल्क में इस बात जो बवाल में फैला हुआ है, फसाद की हालत में है। दुकानें लुट रही हैं, लोग दुकानें लुट रहे हैं। नमक की वजह से दुकानें लूट रही हैं, मॉल लूट रहे हैं। ये सारे हालात में लाने वाले नरेंद्र मोदी जी हैं और ये बीजेपी सरकार है इनके लोग मीडिया पर जा रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय : कन्कलूड करिये अमान जी, कन्कलूड करिये प्लीज।

श्री अमानतुल्लाह खान : उसमें उनके अपने लोग हैं, कहते हैं कि हमें कोई दु:ख नहीं हुआ लेकिन मुझे अभी तक एक भी आदमी ऐसा नहीं मिला, मैं मेरठ गया, मुज्जफरनगर गया। कल मैं कनाट प्लेस गया, वहां मुझे एक भी ऐसा आदमी नहीं मिला जिसने मुझे ये कहा हो कि साहब ये अच्छा फैसला है। वो मीडिया पर चार छह लोग कहां से आते हैं, मुझे खुद नहीं पता लगता है। हमें तो कोई आदमी ऐसा नहीं मिल रहा। हरेक आदमी ये कह रहा है कि मैं दुखी हूं। हरेक आदमी ये कह रहा है कि मैं परेशान हूं। मेरा कारोबार बर्बाद हो गया, तबाह हो गया मेरा। हलाल का कारोबार था मेरे अब्बा करते आये हैं, अब मैं कर रहा हूं और एक एक पैसा मैं टैक्स भी देता हूं लेकिन उसके बावजूद भी हमें सब रोक दिया गया। आज हालात ये हैं कि मुल्क सिविल वार की तरफ जा रहा है और उसके जिम्मेदार नरेंद्र मोदी जी हैं। नरेंद्र

मोदी जी अहंकारी वार की तरफ जा रहे हैं और उसके जिम्मेदार नरेंद्र मोदी जी हैं। नरेंद्र मोदी जी अहंकारी आदमी हैं। नरेंद्र मोदी जी इस फैसले को वापिस नहीं लेंगे। हम जानते हैं कि 2002 के दंगों में उनकी कितनी आलोचना हुई थी। उसके बावजूद भी उन्होंने अपना फैसला वापिस नहीं लिया था। आज ये मुल्क सिविल वॉर की तरफ जा रहा है। लोग दुकानें लूट रहे हैं। लोगों के बच्चे भूखे हैं। घर में पैसा होने के बावजूद भी दुकानों पर सामान नहीं है। इन हालात में क्या करना है, ये हमें सोचना चाहिये और ये बीजेजी को किस तरह से हमें मजबूर करना है कि इस फैसले को... ये तुगल की फैसला है। क्योंकि वो जिद्दी आदमी है। वो किसी की सुनते नहीं हैं, किसी की तकलीफ वो जानते नहीं हैं। बहुत सारे लोगों ने कहा कि अगर उनकी शादी हुई होती तो उन्हें पता होता कि घर कैसे चलता है। उनके पास तो बीवी भी नहीं है। उनके पास तो बच्चे भी नहीं हैं। तो उन्हें तो एहसास ही नहीं है इस बात का। जेटलजी साहब ने कह दिया कि साहब अस्पताल में चैक दे दें। तो कैसे चैक दे सकता है!

...(व्यवधान)

श्री अमानतुल्लाह खान : जो बीवी उनकी है, उनके पास नहीं है। तो उन्हें तो इस बात का एहसास ही नहीं है। इसबात का उनको तो है ही न हीं एहसास कि बच्चे कैसे भूखे मरते हैं।

...(व्यवधान)

श्री अमानतुल्लाह खान : घर वालों की तकलीफ क्या होती है, गरीबों की तकलीफ क्या होती है।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : बैठिए, बैठिए। बिजेन्द्र जी बैठिए। बिजेन्द्र जी बैठिए प्लीज। उन्होंने क्या गलत कहा? यही तो कहा है कि उनके बच्चे नहीं हैं विजेन्द्र जी, बैठिए।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : विजेन्द्र जी, बैठिए आप। ऐसे नहीं चल पायेगा (व्यवधान) आप बैठिए। विजेन्द्र जी बैठिए, विजेन्द्र जी बैठिए प्लीज।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : विजेन्द्र जी, बैठिए प्लीज।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : विजेन्द्र जी, विजेन्द्र जी, मैं आपको चेतावनी दे रहा हूं।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : विजेन्द्र जी, आप सारी सीमाएं तोड़ रहे हैं। अध्यक्ष खड़े हैं और आप बोल रहे हैं! विजेन्द्र जी, अध्यक्ष खड़े हैं और आप बोल रहे हैं! आप भारत की जनता के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। आप अन्यायपूर्ण बोल रहे हैं। आप सारा अन्यायपूर्ण बोल रहे हैं।

...(व्यवधान)

(सत्तापक्ष के कई सदस्य नारेबाजी करते हुए सदन के वेल में आये)

अध्यक्ष महोदय : अमानतुल्लाह जी, सरिता जी वेल में नहीं।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : अमानतुल्लाह जी प्लीज, अमानतुल्लाह जी, सरिता जी...

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मैं पंद्रह मिनट के लिये हाउस एडजर्न करता हूं।

(सदन की कार्यवाही 15 मिनट के लिए स्थगित की गयी)

सदन अपराह्न 3.05 बजे पुनः समवेत हुआ।

माननीय अध्यक्ष महोदय **(श्री राम निवास गोयल)** *पीठासीन हुए।*

अध्यक्ष महोदय : अलका लाम्बा जी।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : मुख्यमंत्री जी को आने दो।

अध्यक्ष महोदय : आ जाएंगे वो तो। चर्चा होने दो, चर्चा से क्या दिक्कत है? आ जाएंगे वो। चर्चा बीच में थोड़े ही रूकेगी। देखिए विजेन्द्र जी, मैं आपसे प्रार्थना कर रहा हूं कि जिस विषय पर चर्चा चल रही है, उसको चलने दो।

श्री अमातुल्लाह खान : सर, मेरी बात हुई है विजेन्द्र जी से। बहुत सारी बातें हुई हैं हमारी।

अध्यक्ष महोदय : अब इस ढंग से उचित नहीं है और ये बहुत गलत तरीका आप ले रहे हैं। नहीं, बिल्कुल नहीं, जो आपने व्यवहार दिखाया है, जो आप पढ़ रहे हैं। जो कुछ पढ़ रहे हैं, थोड़ा बहुत कानों में आ रहा है, पूरा नहीं आ रहा है, लेकिन उचित नहीं है... नहीं कुछ भी है।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : छोड़िए आप। विषय नहीं है ये। नहीं विजेन्द्र जी, ये बात ठीक नहीं है। ये बात बहुत गलत है और ये मैं आपको सख्ती से हिदायत, मैं सख्ती से हिदायत दे रहा हूं आपको। नहीं बिल्कुल नहीं आपका तरीका ठीक नहीं है। जिस ढंग की आप बात कर रहे हैं। ये आप एक तरफ तो कह रहे हैं प्रधानमंत्री पर आरोप लगा रहे हैं और एक तरफ आप जिस ढंग की भाषा ये लेकर आए हैं। नहीं, बैठ जाइए आप। मैं बिल्कुल नहीं इसको स्वीकार...

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : अलका जी शुरू करिए आप। विजेन्द्र जी मैं आग्रह कर रह हूं।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मैंने तुरंत अमानतुल्लाह को भेजा वापस। अब बैठ जाइए आप। देखिए विजेन्द्र जी...

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : विजेन्द्र जी, मैं आपसे आग्रह कर रहा हूं। मैं आग्रह कर रहा हूं आपसे... आपको चेतावनी दे रहा हूं विजेन्द्र जी। मैं आपको चेतावनी दे रहा हूं... मैं चेतावनी दे रहा हूं आपको। मैं चेतावनी दे रह हूं आपको। मुझे यह स्टेप लेना पड़ेगा। अब जिस ढंग की भाषा बोल रहे हें... मैं चेतावनी दे रहा हूं आपको। मैं बार-बार चेतावनी दे रहा हूं। मैंने कोई अनुमति नहीं दी है पढ़ने की।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मैंने कोई अनुमति नहीं दी है। आप अन-नेसेसरी भारत की जनता से... नहीं, मैं नहीं सुन रहा हूं कुछ भी। मैं बिल्कुल नहीं सुन रहा हूं, बैठ जाइए। बैठ जाइए आप। बैठ जाइए आप विजेन्द्र जी। आप बैठ जाइए मैं आग्रह कर रहा हूं, बैठ जाइए मैं आग्रह कर रहा हूं, बैठ जाइए आप। विजेन्द्र जी बैठ जाइए।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मैं कह रहा हूं मैंने कोई अनुमति नहीं दी। आप अपने तरीके से चलेंगे। आप बैठ जाइए। आप बैठ जाइए प्लीज। मैं आपसे आग्रह कर रहा हूं। विजेन्द्र जी, मैं आपसे आग्रह कर रहा हूं बैठ जाइए। मैं चेतावनी दे रहा हूं।

(सत्तापक्ष के सदस्यों द्वारा सामूहिक नारेबाजी)

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : बैठिए आप प्लीज। मैंने रूलिंग दे दी है आप बैठ जाइए। आप बैठ जाइए प्लीज। मैं कुछ भी इसको अलाउ नहीं कर रह हूं। आप मेरी बात सुन लीजिए विजेन्द्र जी। एक सेकेंड रूक जाइए। देखिए, जिस ढंग से आप विषय को रख रहे हैं या आपका रखने का तरीका है, ये बहुत ही नाजायज और बेहूदा है। मैं ये शब्द इस्तेमाल कर रहा हूं। और एक चीप पब्लिसिटी के लिए बोल रहे हैं। केवल चीप पब्लिसिटी के लिए! आपको थोड़ा बहुत विचार करना चाहिए। आप नेता विपक्ष हैं। हां, दीजिए लिखकर। आप चीप पब्लिसिटी के लिए कर रहे हैं। मुझे मजबूरन बोलना पड़ रहा है। मुझे मजबूरन बोलना पड़ रहा है। आपने मनीष सिसौदिया को जो झूठ बोला। मैं

उसको दे सकता था... चलिए ठीक है। अमानतुल्लाह जी।... अमानतुल्लाह जी हो गया था सारा। अब चलने दो एक बार प्लीज।

श्री अमानतुल्लाह खान : अध्यक्ष महोदय, वेद प्रकाश एक बीजेपी के लीडर हैं, उनकी है प्रकाश इंडस्ट्री। उनके छोटे भाई हैं जेपी अग्रवाल। ये सूर्या फाउंडेशन सर्वे कराते हैं। सारे जितने भी सर्वे होते हैं हिंदुस्तान में होते हैं, बीजेपी जो भी कराती है, वो इससे कराती है। वो जो डिफॉल्टर की साढ़े आठ लाख करोड़ की जो वो लिस्ट है, उसमें इस आदमी के पास 3665 करोड़ रूपया ये भी डिफॉल्टर की लिस्ट में है। लेकिन आज तक बीजेपी ने इस आदमी से नहीं पूछा। उसके बदले में ये इससे सर्वे करा रही है और झूठे सच्चे जो भी सर्वे वो कराती है बीजेपी, ये करके देता है। तो इनसे भी पूछताछ होनी चाहिए। बीजेपी के अपने लोग हैं। दूसरा नरेंद्र मोदी जी से पहले 8 नवंबर को नरेंद्र मोदी जी ने... तुगलकी फरमान जिसको कहा जा रहा है, इससे पहले बादशाह तुगलक जो...

अध्यक्ष महोदय : अब कन्क्लूडक करिए अमानतुल्लाह जी, प्लीज कक्लूड करिए।

श्री अमानतुल्लाह खान : अध्यक्ष महोदय, 1329 में उन्होंने करंसी को चैंज किया था, करंसी को बंद किया था। उस वक्त में ब्रॉस और कॉपर की उन्होंने करंसी लागू की थी और ब्रास और कॉपर की करंसी को सोने और चांदी की करंसी के बराबर कर दिया था। उस वक्त में लोगों में वहां पर आक्रोश हुआ तो 1934 में बगावत हुई वहां पर। वहां पर लोगों का कहना था कि इस आदमी ने अर्थव्यवस्था को बर्बाद कर दिया और 1937 में इस फरमान को वापस ले लिया।

अध्यक्ष महोदय : अब कनक्लूड करिए अमानतुल्लाह जी, प्लीज कनक्लूड करिए।

श्री अमानतुल्लाह खान : आज ये तुगलकी फरमान कहा जाता है। ये बीजेपी ने दुबारा लागू किया और इनको भी इसको वापस लेना चाहिए। जब तुगलक ने वापस ले लिया था तो उस वक्त में उनके उस फरमान से अर्थव्यवस्था बर्बाद हो गई थी तो आज भी बर्बाद हुई है। आज इनका कहना यह है कि जो भी नोट का कारोबार, जो भी नोट से लेन-देन करेगा जो इल्लीगल है और जो चेक से लेन देन करेगा, वो लीगल है। आज अडानी और अम्बानी से ये पूछने वाले नहीं हैं, आज अडानी और अम्बानी से बड़ा चोर कोई नहीं है।

अधक्ष महोदय : अमानुल्लाह जी, प्लीज कनक्लूड करिए।

श्री अमानतुल्लाह खान : अगर कोई है तो वो अम्बानी है या अडानी है। उनसे पूछने वाला कोई नहीं है। उनको ये बचा रहे हें और इन्हीं बातों के साथ मैं अपनी बात को खत्म करता हूं और ये जो आज नरेंद्र मोदी का ये जो तुगलकी फरमान है, इसका हम मुखालफत करते हैं, इसका हम विरोध करते हैं और इसको वापस लिया जाना चाहिए, धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय : अलका लाम्बा जी।

सुश्री अलका लाम्बा : धन्यवाद, अध्यक्ष जी। आपने इस मुद्दे पे मुझे बात करने को कहा और मैं दिल्ली सरकार का आभार व्यक्त करती हूं। दिल्ली और देश के लोगों की ओर से आज ऐसे समय पर जब सबसे ज्यादा इस संकल्प की जरूरत महसूस की जा रही थी ऐसे समय पर दिल्ली सरकार ने इस संकल्प को लाने का फैसला किया और आज जुबान भी हमारी होगी और

शब्द जो हैं, हमारे होंगे, लेकिन जो दर्द है वो दिल्ली और देश के लोगों का होगा।

अध्यक्ष जी, 25 जून, 1975 को देश में पहली बार इमर्जेंसी लगी थी। मैं उस समय पैदा भी नहीं हुई थी। लेकिन मुझे यकीन है कि आप उस समय राजनीति में सक्रिय थे। उस समय जब इमर्जेंसी जब पूरे देश में लगी थी वो एक राजनीतिक अराजकता का माहौल था। लेकिन आज...

(दर्शक दीर्घा में शोरगुल)

अध्यक्ष महोदय : भई, ये ऊपर जरा बातचीत कैसे हो रही है? ये क्या हो रहा है भई? बातचीत कैसे कर रहे हैं? बैठ जाइए प्लीज शांतिपूर्वक। हां, अलका जी कन्टीन्यू करिए।

सुश्री अलका लाम्बा : अध्यक्ष जी, मैं वही कह रही थी कि 25 जून, 1975 को जब देश में इमर्जेंसी लगी थी, मैं पैदा भी नहीं हुई थी लेकिन आपने उस इमर्जेंसी को अपनी आंखों से देखा, महसूस किया होगा। उस समय जब इमर्जेंसी लगी, उसकी तारीफ कर रहे थे, उसे ठीक ठहरा रहे थे और बहुत से लोगों जो ठीक ठहरा रहे थे, मुझे लग रहा है आज उसी तरह बहुत से हमारे खिलाड़ी हैं, बहुत से हमारे राजनेता हैं। मुझे लगता है कहीं न कहीं दबाव दिया, बंदूक रख के उनसे ये हालात जो देख रहे हैं, उसे नजर अंदाज करते हुए सरकार के इस कदम की जो तारीफ करवाई जा रही है, यही कुछ समय पहले भी हुआ था। पूरा देश अराजकता का माहौल, उस समय राजनीतिक था, इस समय राजनीति के साथ आर्थिक भी है। अध्यक्ष जी, मैं और मनीष सिसौदिया जी शनिवार को चांदनी चौक बाजार में, खारी बावली में कश्मीरी गेट में एक छोटे से छोटे व्यापारी को मिले। हमने वहां देखा बाजार पूरी तरीके

से बंद पड़े हुए हैं। अध्यक्ष जी, व्यापारियों ने बताया जो छोटा व्यापारी भी है, चांदनी चौक जैसी जगह पर 10-12 हजार रूपये कमा लेता है, उसकी सेल 4-5 सौ रूपये पर आकर रूक गई है। उसके पास घर में जाकर बच्चों को खिलाने के लिए रोटी तक के पैसे नहीं हैं। लंबी लम्बी लाइनें लगी हुई हैं। अध्यक्ष जी, मैं एक चीज के ऊपर ध्यान दिलवाना चाहती हूं। दो, तीन चीजें हैं, नरेंद्र मोदी जी, देश के प्रधानमंत्री ने 8 तारीख की रात को 8 बजकर 17 मिनट पर सारे टीवी चैनल पे लाइव होने लगा कि पता नहीं हो गया है। पहला शब्द था कालेधन से लड़ना चाहते हैं, पूरे देश में खुशी थी। मुझे वो भी शब्द सुनकर बहुत खुशी महसूस हुई कि शायद प्रधानमंत्री ढाई साल बाद शायद अपना कमिटमेंट पूरा करने जा रहे हैं और ये देश कालेधन से लड़ना चाहता है लेकिन जैसे तैसे उन्होंने अपनी बात को आगे बढ़ाया तो हमारे पांव के नीचे से जमीन हट गई क्योंकि हम जमीन के लोग हैं, हमें मालूम था कि ये जो फरमान जारी किया जा रहा है, उसके बाद देश और दिल्ली के अंदर हालात क्या होने वाले हैं!

अध्यक्ष जी, सबसे बड़ा मजाक उन्होंने तब किया जब 8 तारीख की रात को वो तुगलकी फरमान जारी करते है और 500 और 1000 के नोटों पर पाबंदी लगा देते हैं और 9 तारीख की सुबह हवाई जहाज लेकर विदेशी दौरे पर जापान रवाना जो जाते हैं और वहां जाकर जो भारतीय कम्युनिटी है, उसमें ठहाके लगा कर तालियां बजा बजा कर जिक्र करते हैं, उस बूढ़ी मां का जो कहीं वृद्धाश्रम में पड़ी हुई है। ये कहते हैं, मेरी बात हुई एक मां से जो पता नहीं, कब बात होगी। बड़ी हैरानी की बात है कौन से आश्रम में, कौन सी मां से प्रधानमंत्री जी की बात हुई, जुमले गढ़ना इनसे सीखिए कोई। उन्होंने वहां जापान की हमारी इंडियन कम्युनिटी के सामने कहा कि मुझे मां ने बहुत

आशीर्वाद दिया। उन्होंने कहा कि मेरा बेटा–बहू मुझे वृद्धाश्रम में छोड़ गए थे। लेकिन अब उनको मेरी याद आ रही है। मेरे बैंक में ढाई लाख रूपया जमा हो गया है। वो मां कहां है? कौन सा आश्रम है? कब बात हो गई प्रधानमंत्री जी से जिसका जिक्र वो जापान में जाकर कर रहे थे और ठहाके लगा रहे थे? अध्यक्ष जी, वो मां मुझे मिल गई है, मैं बताना चाहूंगी और उस मां ने मुझे कहा जिस मां की प्रधनमंत्री जी से बात हुई, वही मां उसी हिसाब से मुझे भी बता रही है कि मोदी जी को जाकर कह दीजिए कि मुझे नहीं मालूम मेरा बेटे ने कब, कैसे ढाई लाख डाला है। अगर आपकी जानकारी में है मोदी जी तो जाइए, कालाधन मेरे खाते में डालने के मामले में मेरे बेटे को गिरफ्तार करिए, जेल में डालिए और आशीर्वाद मैं आपको तब दूंगी, जब वो मां ये कह रही है कि मैं अपनी चार दिन से पासबुक लेकर बैंक के धक्के खा रही हूं, मैं अपनी पेंशन नहीं लगवा पा रही हूं। मैं दवा नहीं ले पा रही हूं। वो मां रो रही है। ये मोदी जी को मैं बताना चाहती हूं। ये वही मां है जिस मां ने आपको आशीर्वाद दिया था।

अध्यक्ष जी, सबसे बड़ी बात खाता नं. मैं बता रही हूं ऑन रिकॉर्ड 5545110034 ये किसका अकाउंट नं. है, अध्यक्ष जी पश्चिम बंगाल के भाजपा के जो खाता है। पार्टी कार्यालय का खाता का नं. बता रही हूं दुबारा बता रही हूं 554510034। मैं क्यों इसका जिक्र कर रही हूं अध्यक्ष जी, क्योंकि प्रधानमंत्री देश के कहते हैं कि ये जानकारी बहुत खुफिया रखी गई है, किसी को इसकी जानकारी नहीं दी गई है। 8 तारीख की रात को 8 बजकर 37 मिनट पर घोषणा करते हैं और उसी दिन सुबह 500 और 1000 के नोट भाजपा कार्यालय बैंक के खातों में जमा करा देता है, सुबह सुबह! ये कोई पूछेगा कि एक करोड़ रूपया जो भाजपा के खाते में सभी के सभी 100 और 500

के नोट जमा कराए गए, वो कैसे आए और ये एक ही उदाहरण नहीं, ऐसे बहुत से उदाहरण हैं अध्यक्ष जी, जो मैं आपको गिना सकती हूं और मुझे लगता है बिल्कुल कि जो जांच होना बेहद जरूरी हो चुकी है। ये कहना कि ये जानकारी किसी को नहीं थी, ये बिल्कुल झूठ है। इसका एक ओर मैं आपको सबूत दे देती हूं। अध्यक्ष जी, मैं पूछना चाहती हूं ये शख्स संजीव कम्बोज, ये कौन है? ये पंजाब का भाजपा का बहुत बड़ा नेता है। ये ट्विटरपर 2 हजार के नोटों की गड्डी की तस्वीर डालते हैं और कब डालते हैं? मोदी जी, देश के प्रधानमंत्री घोषणा करते हैं 8 तारीख की रात को और संजीव कम्बोज जो भाजपा के बहुत बड़े नेता है पंजाब से, वो ये खबर डालते हैं 10 बजकर 53 मिनट सुबह 6 नवम्बर को जब देश को नहीं पता था कि दो हजार रूपये का नया नोट आने वाला है, उसकी शक्ल क्या होगी! प्रधानमंत्री मोदी जी की घोषणा के बाद उस नोट को दिखाया गया पूरे देश में कि वो नोट कैसा होगा। लेकिन भाजपा के इस नेता के पास इसकी जानकारी, इसकी तस्वीरें थी कि ये नोट कैसा है। ये तो देश जानना चाहेगा, कैसे इनको खबर थी इसकी! लेकिन इसका जवाब भाजपा का कोई नेता देने को तैयार नहीं। उल्टा राष्ट्रवाद और देश भक्ति के नाम पर जिस तरह से निर्दोषों को... मैं कहूंगी जो कि इंडिया के भी पूर्व चीफ जस्टिस ने भी कहा है कि जिनको फेक एन्काउंटर में मारा गया है। उनका दोष कभी साबित ही नहीं हुआ। वो अभी अंडर ट्रायल थी। तो देश भक्ति के नाम पर राष्ट्रवाद के नाम पर, आतंकवाद के नाम पर जिस तरह से निर्दोषों को फेंक एन्काउंटर का शिकार बनाया जा रहा है, अब ठीक उसी तरह देश भक्ति के नाम पर, राष्ट्रवाद के नाम पर निर्दोषों को, गरीब मजदूर, आम आदमी, किसानों को लाकर इन्होंने सड़क पे खड़ा कर दिया है। शर्म आती है, यहां पे उस मां के आंसू नहीं

दिखते हैं और आज सबसे बड़ी तो मैं निंदा करना चाहूंगी, शर्म आती है कल जब कांग्रेस के नेता राहुल गांधी लाइनों में खड़े थे तो मोदी जी भाषण दे कर ठहाके लगा रहे थे कि मां का कालाधन जमा करने के लिए एक बेटा लाइन में खड़ा है और आज मैं कहूंगी क्या देश के प्रधानमंत्री जी आपकी भी माताजी को आज 90 साल की उम्र में लाइन में खड़ा करने को एक फोटो को एक अपोर्च्युनिटी के तौर पर आपने देखा। 90 साल की मां को लाइन में खड़ा कर दिया है। बहुत से बेटे हैं... मैंने चार हजार रूपया लाइन में खड़ा होकर निकाला और सबसे पहले चार हजार में से दो हजार लेकर मैं अपने... 80 साल के करीब मेरे पिताजी की उम्र होने वाली है, 75 साल ऊपर हुए मेरी मां है, सबसे पहले अगर चार हजार निकाले तो दो हजार अपनी मां को देकर आई थी कि मां जरूरत हो तो रख लो मुझे पता है आप लाइनों में नहीं लग पाओगी, आपको शुगर की बीमारी है। देश के प्रधानमंत्री ने हजार बदलने के लिए अपनी माताजी को लाइन में खड़ा कर दिया। बहुत सी माताओं की पेंशन नहीं मिल पा रही है, वो रो रही हैं। अध्यक्ष जी, और मैं आपको बताती हूं कि इसके अलावा बाबा रामदेव जी ने भाषण दिए थे नरेंद्र मोदी जी के चुनावों में समर्थन किया था कि कालाधन आएगा, 15 लाख आएगा सबके खाते में। हम इसी किस्म का इंतजार कर रहे थे कि जो मोदी जी घोषणा करने लग गए। मुझे लगा शायद कालाधन वापस आ गया और सबके खातों में 15 लाख आने वाला है। लेकिन अध्यक्ष जी होता क्या है... अभी एक अलवर की क्लिपिंग चल रही है किसी न्यूज चैनल पर और उसमें बाबा रामदेव... अलवर, राजस्थान का कोई उपचुनाव होना है, उसके उम्मीदवार है चांद नाथ प्रत्याशी, उनके प्रचार में गए। प्रचार में गए तो वे भूल गए कि उनके सामने माइक और कैमरे लगे हुए हैं। जो भाजपा के प्रत्याशी चांदनाथ

हैं, वो बाबा रामदेव के कान में कहते हैं जिनके उनके सामने माइक और कैमरे लगे हुए हैं। जो भाजपा के प्रत्याशी चांद नाथ हैं, वो बाबा रामदेव के कान में कहते हैं कि अरे! बड़ी मुसीबत आ गई। मेरा भी पैसा पकड़ा गया! ये उनके शब्द हैं, ''कहीं से पैसे लाने में बड़ी दिक्कत हो रही है। हमारे पकड़े भी गए।'' अब बाबा रामदेव जी क्या कहते हैं....उनका हाथ पकड़ते हैं, उन्हें चुप करतो हैं कि ये बात यहां बंद करो, बावले हो गए हो। यहां मत करो, फंस जाओगे। ये क्या सच्चाई है? क्लिपिंग चल रही है मीडिया नहीं दिखा रहा उसको। उसके ऊपर बाबा जी से नहीं पूछा जा रहा कि किसका कौन सा पैसा पकड़ा गया। ये वही बाबा रामदेव हैं जो पतंजलि के अंदर करोड़ों रूपये....मैं कह रही हूं सरहद पर खड़े जवान का बाबा रामदेव हवाला दे रहे हैं देशभक्ति के नाम पर। बाबा रामदेव जी, आपको तब हम मानेंगे जब आप पतंजलि के दरवाजे खोल देंगे ताकि जो लोग आज भूखे हैं, उनके घर तक पतंजलि का सामान पहुंचे लेकिन आपके यहां पर भी काले धन को सफेद करने का काम चल रहा है।

दूसरा, भाजपा के बहुत बड़े नेता बहुत नाम फेमस हुए। सुषमा स्वराज जी जब वहां से चुनाव जब लड़ी थी। बिलारी ब्रदर्स करके माइन्स माफिया है, सी. बी. आई. में उनके केस चल रहे हैं। 16 तारीख को उनकी बेटी की शादी है। ये हिंदुस्तान टाइम्स के न्यूज पेपर में खुलासा है कि 500 करोड़ रूपया बिलारी ब्रदर्स, रेड्डी ब्रदर्स, जो भाजपा के नेता हैं, 500 करोड़ रूपये अपनी बेटी की शादी पर खर्च करना चाह रहे हें। क्या इसकी कोई जांच करेगा कि ये 500 करोड़ रूपये जो शादी पर उड़ाया जाएगा ऐसे माहौल में, वो कहां से आया? वो कैश बैंको से आया कैश है तो कब और कौन से बैंकों में बदला गया? अध्यक्ष जी, इसकी कोई जानकारी अगर आप मागेंगे तो आपको देशद्रोही कहा जाएगा।

अध्यक्ष जी, अभी-अभी एक और हिंदुस्तान टाइम्स, पंजाब की खबर आयी है कि पंजाबी में दो लोगों को दो हजार के जाली नोटों के साथ पकड़ भी लिया गया है। मैं चांदनी चौक से आती हूं। हमारे यहां पर बहुत प्रचलन है, सुनने में आता है कि हवाला कारोबार होता है और 'आज तक' और बहुत से चैनलों ने स्टिंग ऑपरेशन भीकिए कि किस तरह से रातों रात काला पैसा सुनारों की दुकान पर पहुंचा और सुनारों ने कैसे कालाधन स्वीकार करते हुए किस तरीके से कालाधन लेकर के सोना बेचा है! इसका खुलासा हुआ अध्यक्ष जी कि हवाला के थ्रू कैसे पैसा आ रहा है। जाली नोट आ चुके हैं, बिल्कुल इसकी चिंता इनको नहीं हो रही है और अगर आप प्रश्न करेंगे तो आपको देशद्रोही कहा जाएगा! मैं अध्यक्ष जी कहूंगी कि ये अखबार की सच्चाइयां हैं।

अध्यक्ष महोदय, आज दिल्ली के 80 प्रतिशत एटीएम खाली पड़े हुए हैं क्योंकि आपने पांच सौ, हजार के नोट बंद कर दिए। उसके बाद एक ही नोट बचता है जो एटीएम में फिट होता था, वो सौ का होता था और सौ की जो हकीकत है इस देश में, ये मैं नहीं कह रही, ये आंकड़े हैं; ये मेरे हाथ में इंडिया टुडे का न्यूज पेपर है, ये न्यूज पेपर ये बता रहा है कि देश में कुल करेंसी में जो 500 के नोट थे, उसका 47 प्रतिशत जो हिस्सा था और जो 1000 के नोट थे उसका लगभग 37 प्रतिशत आप मानिए लगभग 80-85 प्रतिशत जो करेंसी थी, वो 50 और 1000 के नोट की थी। बाकी जितना भी रह गया कुछ प्रतिशत 100 के नोट से ये देश, ये सोच रहे हैं कुछ यूथ कि चल जाएगा। ये हकीकत है! पहले प्रधानमंत्री जी ने कहा कि मुझे दो हफ्ते दे दीजिए, जापान में ठहाके मार के हंसे यहां पर आकर रोना शुरू कर दिया और अब पचास दिन मांग रहे हैं और अर्थशास्त्री कह रहे हैं कि 6

महीने तक ये व्यवस्था जो है, वो सुधरने वाली नहीं है। अराजकता का माहौल सब जगह है। अगर दिल्ली के मुख्यमंत्री उन्हें चेतावनी भी देते हैं कि धमका रहे हैं! आश्रय लेना चाह रहे हैं कि कश्मीर में अगर स्टोन पेल्टिंग बंद हो गया तो 500 के नोट बंद करने से हुआ है। तो मैं ये भी बता दूं कि इस 500 के नोट के साथ अगर पथराव वहां बंद हो चुका है लेकिन इसके साथ ही खतरा पूरे देश में इसका पैदा हो चुका है और इसके उदाहरण है कि कई जगह लूटमार शुरू हो गई, काला बाजारी शुरू हो गई है। नमक तक को लेकर खारी बावली की दुकान को लूटा गया है। इन सबके लिए ये सरकार बिल्कुल भी तैयारन हीं है। 25 हजार में कैसे होगी बेटी की शादी! इनका दर्द सुनने वाला कोई है! कौन नहीं चाहता अध्यक्ष जी... एक मांम ुझे मिली जिसका मैंने फेसबुक पर वीडियो भी डाला है 10 लाख लोगों ने उसको शेयर किया है। वो मां ये कह रही है कि मैंने 50 हजार रूपया 8 तारीख की सुबह अपनी बेटी की शादी के लिए उधार लिया था, वो 50 हजार अब कागज रद्दी हो चुका है। कर्ज सिर पे खड़ा है। जिससे लिया है, वो कहता है मुझे ये नोट वापिस चाहिए। मैंने जब ये दिए थे, तब ये चलते थे, अब जो मैं लूंगा तो वो लूंगा जो आज चलते हैं। वो मां आज सड़कों पर खड़ी है, रो रही है कि बेटी की बारात रास्ते से वापस लौट रही है। इसी तरह बहुत उदाहरण हैं ऑल इज नॉट वेल!

एक आजादपुर मंडी में फल-फ्रूट और सब्जियां सड़ रही हैं, करोड़ों का नुकसान इस देश की अर्थव्यवस्था को हो रहा है। लोग बेरोजगार हो रहे हैं। जिनके पास 100 लोग काम करने वाले थे, सेलरी ने देने की वजह से उन्होंने... उनको पता है 6 महीने तक अर्थव्यवस्था नहीं सुधरेगी, उन्होंने उनको नौकरियों से बेदखल करके... बेरोजगारी भी एक बड़ा कारण बन रहा है। नोट बदलने में नाकाम युवती ने फांसी लगा ली। इतनी निराशा, हताशा आज आ चुकी है कि आज ये हाल हो चुका है...

अध्यक्ष महोदय : अलका जी कनक्लूड करें प्लीज।

सुश्री अलका लाम्बा : अध्यक्ष जी, मैं यही कहूंगी इसकी इतनी गंभीरता को विपक्ष हलके में मत लें। मैं आपसे कहूंगी, कि हम जमीन से जुड़े हुए नेता हमारे नेता आजादपुर मंडी से लेकर मनीष सिसौदिया जी पूरा चांदनी चौक घूमे जमीन की हकीकत को जानने, जिस जमीनी हकीकत से देश के प्रधानमंत्री कोसों दूर हैं। अगर वो जमीन की हकीकत से वाकिफ होते तो पश्चिम बंगाल, बिहार, दिल्ली में उनका ये हाल नहीं होता। आज भी मैं ये कहूंगी कि समय है, संभल जाएं, जय हिंद जय भारत।

अध्यक्ष महोदय : श्री राजेश गुप्ता जी।

श्री राजेश गुप्ता : अध्यक्ष जी, आपने इतने गंभीर विषय पर बोलने का मौका दिया, उसका बहुत-बहुत धन्यवाद। मैं आपके साथ में धन्यवाद देना चाहता हूं आदरणीय प्रधानमंत्री जी का भी, जैसे अलका जी ने बताया कि उन्होंने उस दौर की सैर कर दी जिस दौर में हम पैदा भी नहीं हुए थे। मैंने सुना था उस वक्त भी या तो मीडिया बैन थी या डरी हुई थी। विपक्षियों को धमकाया जाता था, डराया जाता था। एक ऐसा अराजकता का माहौल था कि लोगों को समझ नहीं आ रहा था कि देश में क्या होगा! और उस वक्त की प्रधानमंत्री भी यही कहती थी कि एक-एक खून का कतरा इस देश के लिए है। मैं ही ये देश हूं ये देश मैं हूं, और वो ही आज के प्रधानमंत्री बिल्कुल लगभग वैसा ही कर रहे हैं ऐसा लग रहा है जैसे वो पुराना आपातकाल बिल्कुल वापस आ गया है।

अध्यक्ष जी, अगर आज मैं कोई डिफरेंस देखता हूं और उस आपातकाल और इस आपातकाल में तो सिर्फ थोड़ा सा फर्क है, नाम भी लगभग मिलते-जुलते हैं। ये नोटबंदी का आपातकाल है, वो नसबंदी का आपातकाल

था। बिल्कुल सेम! ऐसा लग रहा है जैसे कि सब चीजें दुबारा से वैसे ही होने लगी है। मैं अपनी विधानसभा के कुछ उदाहरण आपके सामने पेश करना चाहता हूं, परसों मेरे पास में श्मशान भूमि से फोन आया और उनका कहना था कि जी, ये लकड़ी भी नहीं दे रहे हैं, कह रहे हैं कि पैसे लाओ, नए नोट। नए नोट हैं नहीं। मतलब इतनी बड़ी इमरजेंसी कि मुर्दा भी नहीं जलेगा इस देश में! ये करना क्या चाहते थे? क्या इन्होंने बिल्कुल नहीं सोचा, इन्होंने एक मिनट में कह दिया कि है कि यहां एक्सेप्ट होंगे, यहां नहीं होंगे। पेट्रोल भरना एक इमरजेंसी है लेकिन एक मुर्दे का जलना भी एक इमरजेंसी है। लेकिन लोग फोन कर रहे हैं। लोग परेशान हो रहे है। वहां हमने जब उनको फोन किया कि भई, इसका कोई उपाय बताओ। उन्होंने कहा कि साहब, ठीक है, आपके खाते में लिख देते हैं। ठीक है, लेकिन दो-तीन-चार एक श्मशान भूमि में कितने मुर्दे आते हैं। इतना बुरा हाल है कि अगर आप किसी भी लाइन में लग जाएं और वहां पर लोगों से पूछें कि आप क्या बदलवाने आए हो तो वो आपको देख के पता नहीं ऐसी-ऐसी गालियां दे सकते हैं कि हम विधानसभा में उनका जिक्र भी नहीं कर सकते। बहुत सारी वीडियोज सोशल मीडिया पर चल रही हैं। आप उन्हें देखें तो आपको आभास होगा। आपने जरूर देखी भी होंगी। शायद विपक्ष के नेता ने वो न देखी हों, इतना बुरा हाल है कि उनको देखने के बाद में देश की जनता का जो मूड है इस वक्त... ये जो चीनी बिकी, नमक बिका, पहले लोग कहते थे दाल रोटी खा लेंगे फिर उन्होंने दाल 200 रूपये किलो कर दी। लोगों ने कहा कि नमक से खा लेंगे, इन्होंने नमक 400 रूपये किलो करवा लिया। ये करवाना क्या चाह रहे हैं? आज एक ऐसा माहौल बन गया अड़ोसी-पड़ोसी झगड़े पर उतारू हो गया है। इस वक्त जो देश के हालात हैं, जैसे कि अभी सभी ने बताया जो मेरे से

पहले बोल रहे थे। कि बाजारों के अंदर पैसा सोख गया है, बाजारों के अंदर सामान नहीं है, लोग एक-दूसरे की दुकानें लूटने के लिए तैयार हो जायेंगे, दंगे हो जायेंगे, उसके लिए जिम्मेवार कौन होगा? और एक बात समझ में नहीं आती कि देश के प्रधानमंत्री ने जो कि एक समझदार प्रधानमंत्री माने जाते हैं, तो ऐसा करा क्यों? लेकिन शायद मुझे अचंभा हुआ कि भई मोदी जी ने बहुत दुनिया घूमी है, हिंदुस्तान पहले बहुत घूमा, पूरी दुनिया घूम ली। इतनी समझदारी हो गई फिर इतनी बड़ी गलती कैसे कर गए? क्यों बीजेपी का सत्यानाश करने के लिए उन्होंने सोच लिया? तो मुझे कुछ ऐसा लगता है कि ये वही अहंकार है, जो रावण में था, ये वहीं अहंकार है, जो नेपोलियन के खिलफ था कि चलो, वाटरलू चलते हैं। तो सर जी, आप वाटरलू की तरफ चल पड़े। आपने अपनी मौत को खुद बुलावा दे लिया क्योंकि आप देश के खिलाफ खड़े हो गए आप। आप जापान में हंसते हुए कहते हो कि जो 4000 निकलवा रहे हैं, ये सारे कालाबाजारी हैं। आपने फोटो देखी होंगी, शक्लें देखी और ये बात मैं चैलेंज से कहता हूं अध्यक्ष जी, विपक्ष के नेता चलें मेरे साथ, जेजे कालोनी में चलो, ये बात कह दें जो मोदी जी ने कहा है कि जो तुम लाइन में खड़े हो, सारे कालााजारी हैं। बस इतना कहना है और कुछ नहीं कहना उसके बाद में जनता तय कर लेगी कि उसे क्या करना है जनता ने वैसे तय करा हुआ है। ये कह नहीं सकते, किसी से इस बात को। आदरणीय फाइनेंस मिनिस्टर साहब कहते हैं कि जो आप शगन दे रहे हो शादी में उसे चेक से दो। कमाल ही हो गया! शायद या तो किसी शादी में गए नहीं हैं। मुझे मालूम है वो लोकसभा का चुनाव एक बार लड़े और हार गए। वो राज्यसभा से जाते रहे और उन्हें जनता का पता नहीं है, जनता में जाते नहीं हैं। लेकिन इतने अनभिज्ञ हैं कि जब देश में बेटी की शादी होती है तो लोग सौ रूपये, 21 रूपये,

11 रूपये लिखवाते हैं लोग भाई साहब! आप ठीक है 2100 रूपये देने वाले हैं लेकिन हम जैसे भी है 101, 151 वाले। अब चेंज कैसे दूं 51 रूपये का! लेकिन शायद ये दुनियादारी से इतने बेखबर हैं कि इनको मालूम ही नहीं है कि ये कह क्या रहे हैं ये!

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : चलिए, चलिए।

श्री राजेश गुप्ता : देखिए, कि जब इन्होंने ये कदम उठाया। ...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मिल कहां रहा है? कौन से एटीएम में मिल रहा है? मिल कहां रहा है? मैं वास्तविकता बता रहा हूं। मिल नहीं रहा है। चलिए, चलिए।

श्री राजेश गुप्ता : अध्यक्ष जी, मेरे पास हास्पिटल से फोन आ रहे हैं। मैं आपको एक उदाहरण देता हूं। मेरी विधान सभा का एक लड़का अपनी पत्नी को लेके हास्पिटल में गया। उसको ऐसा महसूस हुआ कि उसका बच्चा जो उसके पेट में है, हलचल नहीं कर रहा है। अल्ट्रासाउंड कराने के लिए हॉस्पिटल में कहा गया जी कि 1200 रूपये लगेंगे लेकिन नए नोट लेंगे। ऐसी परिस्थितियां बन चुकी हैं कि लोग मर रहे हैं। जैसे कि अभी आदरणीय उपमुख्यमंत्री जी ने बताया कि पच्चीस तो लाईन में मर गये और लाईन के बिना कितने मर गये, उसका कोई हिसाब ही नहीं है! मैं कहता हूं कि एक विधान सभा में पच्चीस लोग मर रहे हें। कोई हॉस्पिटल के बेड पर मर रहा है, कोई लाईन में खड़े हुए मर रहा है। कोई राशन नहीं मिल रहा है, इसलिए

मर रहा है। कोई सदमे से मर रहा है। जिसके घर में रखा हुआ पैसा खत्म हो गया है, वो बच्चियां जिन्होंने ट्यूशन पढ़ा-पढ़ाके अपने लिए दस-बारह लाख रूपये इकट्ठे किये थे, इनको काला धन वो दिखाई देने लगा। उन्होंने सिलाई-सिलाई चला-चलाके वो पैसा इकट्ठा करा था, इनको वो काला धन दिखाई दे रहा है। बस ढाई लाख रूपये जमा करा सकते हो जी, उसके ऊपर नहीं करा सकते। ये क्या फिगर उन्होंने निकाल जी? किस हिसाब से निकाल ली, मुझे पता नहीं है।

अध्यक्ष महोदय : कन्क्लूड करिये राजेश जी। कन्क्लूड करिए, प्लीज।

श्री राजेश गुप्ता : ये मुझे एक बात समझ में नहीं आती है कि सर, जब कोई चुनाव लड़ता है तो थोड़ा बहुत विपक्ष के लोगों से भी बात करता है। कुछ अपने तरीके से भी हम सरकार में देखते हैं, बहुत सारे लोग पुराने हैं, कांग्रेस के समर्थन के लोग भी है। इतना बड़ा काम हो गया। 6 महीने पहले नोट छपने शुरू हो गये। ये बात मनमोहन सिंह जी को, सोनिया गांधी जी को पता नहीं लगी, शरद पवार जी को पता नहीं लगी। या कोई सेटिंग हो गयी थी। ये मानने को कोई तैयार ही नहीं होगा कि इतना बड़ा काम हो गया। आपने नोट भी छाप लिये, आपने नोट के बंडल भी बना लिये, आपने इतनी बड़ी पालिसी भी बनायी। आप एक साल से तैयारी कर रहे थे और इस देश के इतने बड़े जो एडवाइजर माने जाते हैं। आप एक साल से तैयारी कर रहे थे और इस देश के इतने बड़े जो एडवाईजर माने जाते हैं। फाइनेन्स के इतने नॉलेज वाले प्रधानमंत्री जी थे मनमोहन सिंह जी, उनको नहीं पता लगा। सोनिया गांधी जी को नहीं पता लगा। आई. एम. एफ. को नहीं पता लगा। ये कैसे हो सकता है सर! शरद पवार जी को नहीं पता लगा

जिनके साथ कूड़े में बैठे थे। काले धन की बात कर रहे थे। बड़े कमाल की बात है। अब काले धने की बात कैसे लोगों के साथ होगी? क्या यह संभव है? तीस हजार करोड़ में जिस प्रधानमंत्री ने अपना चुनाव लड़ा, वो ये बता रहे हैं कि काले धन के बिना चुनाव लड़ेंगे। इनके एक-एक काउंसलर के पास में इतना पैसा है कि ये चार हजार के नोट बदलवाने लग गये...

अध्यक्ष महोदय : कन्क्लूड करिये प्लीज।

श्री राजेश गुप्ता : सर, मेरा ये कहना है कि मेरे यहां पर एक वजीरपुर इंडस्ट्रियल एरिया है। मैं उसकी बात करना चाहता हूं कि मेरे यहां फैक्ट्री नाक आउट हो गयी है। इसमें आगे हमें ये समझना पड़ेगा कि ये फैक्ट्रियां बंद होंगी, लोग नौकरियों से निकलेंगे। लेबर्स को निकाला जायेगा। जब वो रोड पर आ जायेंगे तो वो कहां वापस जायेंगे। यहां दंगे होंगे। हालात खराब हो जायेंगे। अराजकता का माहौल कभी भी बहुत ज्यादा खराब हो सकता है। ऐसे माहौल में हमें बिल्कुल भी नहीं समझ में आ रहा है कि कि हमें क्या करना चाहिए! सिर्फ दो मुख्यमंत्री हैं पूरे हिंदुस्तान में जिनके बोलने की हिम्मत हो रही है कि वो दोनों जूते नहीं पहनते। एक चप्पल पहनतीं हैं और एक सैंडल पहनते हैं। क्योंकि बाकी बोलते हुए डर रहे हैं। बाकी बोलते हुए डर रहे हैं कि बोलेंगे तो मोदी जी छापा पड़वा देंगे इनकम टैक्स का। अरे! अगर छापा पड़वाना था तो पहले अपने नेताओं को पड़वाते। 67 हम तैयार हैं। हमारे पड़वा लो। मेरे आज आ जाओ। लेकिन जो गद्दा फाड़ोगे, वो नया लाके देना पड़ेगा। तकिया फाड़ोगे बस और कुछ नहीं। मुझे कोई टेंशन नहीं है। मैं सर, सिर्फ इतना कहूंगा कि सर, हम इनके साथ हैं, अगर ये काला धन खत्म करना चाहते हैं हिंदुस्तान में। हम पूरी तरह साथ हैं। लेकिन अगली बार पूरी तैयारी से आयें। यह अराजकता

का माहौल, अपने आपको हीरो बनाने के लिए देश कोना मारें। हम पूरी तरह तैयार हैं। हम इनका साथ देंगे। हर बार साथ दिया है लेकिन भगवान के लिए तैयारी से आयें। बहुत-बहुत धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय : श्री जगदीश प्रधानजी। स्विच ऑन करो स्विच। स्विच ऑन। इस पर बोल लीजिए बोलिए। भई, आवाज नहीं प्लीज।

श्री जगदीश प्रधान : धन्यवाद अध्यक्ष जी, सबसे पहले तो मैं जो माननीय प्रधानमंत्री जी ने 500 और 1000 रूपये के नोट बंद किये, मैं कहता हूं कि बहुत अच्छा किया।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : भई देखिए, प्लीज।

श्री जगदीश प्रधान : आपकी सरकार की ईमानदारी की वजह से दिल्ली में 67 सीट आयीं। हम धन्यवाद करते हैं मोदी जी का कि जिन्होंने हजार, पांच सौ रूपये के नोट बंद किये। इससे काले धन पर बैन लगेगा और जो जमीनों की कीमत लाख रूपये गज, दो लाख रूपये गज, पांच लाख रूपये गज और उसका सर्कलरेट पचास हजार रूपये गज! अभी ये भी होने जा रहा है कि जो सर्कल रेट है, शायद उसी के लेवल पर जमीन आ जायेगी जिससे कि गरीब आदमी कोई मकान खरीद पायेगा। आज मैं बड़े दुख के साथ कह रहा हूं कि कम से कम हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी को इस नोट का विरोध नहीं करना चाहिए। मायावती विरोध करे तो ठीक है, मुलायम सिंह विरोध करे तो ठीक है क्योंकि उन्होंने चुनाव में रिश्वत लेकर टिकट देने हैं और जब टिकट देने हैं तो उनके पास नंबर दो का पैसा आयेगा और वो बंद हो गया

तो उनको तो दुख होना चाहिए। मैं आपसे फिर यही कहूंगा... मुख्यमंत्री जी से, मनीष जी से कि आपको इसका समर्थन करना चाहिए। कुछ लोगों को दिक्कत है और एक दो महीने दिक्कत रहेगी जी, क्योंकि लाईनें लगी हुई हैं। वहां लगा रखे हैं। उनके चाय का, पानी का इंतजाम किया हुआ है और अधिकतर अफरा-तफरी का माहौल है जिसके पास घर में दस हजार रूपये रखे हैं, वो भी बैंक में जाकर लाईन में लग रहा है। इस सबको देखते हुए मैं इतना ही कहूंगा, ज्यादा न कहते हुए कि आपको इसका समर्थन करना चाहिए क्योंकि आप ईमानदारी की सरकार आप लेकर के आये हो और जहां तक प्रधानमंत्री जी की बात है तो प्रधानमंत्री जी ईमानदार आदमी हैं, इसमें कोई दो राय नहीं है और उन्होंने देश के लिए जो किया है, मैं समझता हूं कि बहुत ही सराहनीय काम किया है। इससे आने वाले दिनों में महीने, दो महीने चार महीने की दिक्कत हो सकती है बाकी लांग टाईम में इसका बहुत अच्छा प्रभाव पड़ेगा, धन्यवाद, जयहिंद।

अध्यक्ष महोदय : श्री नितिन त्यागी जी।

श्री नितिन त्यागी : थैंक यू अध्यक्ष महोदय, कि आपने इस मुद्दे पर बोलने का मौका दिया।

अध्यक्ष महोदय : संक्षेप में रखिये नितिन जी।

श्री नितिन त्यागी : सर, संक्षेप में ही रखता हूं। ये 27 अक्तूबर की एक खबर है दैनिक जागरण न्यूज पेपर है लखनऊ, अवध, फैजाबाद का ये एडिशन है जिसमें कि जो 8 तारीख को 8.17 मिनट पर मोदी जी ने, माननीय

प्रधानमंत्री जी ने जो एनाउन्समेंट की थी, वो पूरी की पूरी इसमें छपी हुई है। सर 27 अक्तूबर को! और उसी वक्तव्य में मोदी जी ने, माननीय प्रधानमंत्री जी ने ये कहा था कि ये बात बाकी अधिकारियों को और सबको तभी पता चलती है, जब मैं बोल रहा हूं। तो सर, काफी सदमा सा लगा ये सोच के कि क्या मेरे देश का प्रधानमंत्री झूठ बोल रहा है! तो ये खबर तो पहले छप चुकी थी और ये खबर वर्बटिम जैसी छपी है, जैसे उन्होंने बोला और ये खबर छपने के तकरीबन दस दिन के बाद, बारह दिन के बाद में मोदी जी वक्तव्य देते हैं टी. वी. पर और कहते हैं कि ये सबको तभी पता चला रहा है अब जब मैं बोल रहा हूं। मैं ये मुद्दा तो उठाना ही नहीं चाहता था कि उन्होंने कहा कि कई महीने से 6-8 महीने से इसकी प्रेपरेशन चल रही थी और नोट छप रहे थे तो उसमें वो नये जो गवर्नर आये हैं पटेल साहब, उनके सिग्नेचर कहां से आये? हो सकता है पहले छपवा लिये हों और साईन उनसे बाद में करवा लिये हो! लेकिन जो माननीय प्रधानमंत्री जी ने कहा उस समय तो सर, सदमा जरूर लगा कि क्या मैं ऐसे देश में रह रहा हूं जहां का प्रधानमंत्री झूठ बोलता है! नेशनल चैनल्स पर, प्राईम टाईम पर, सौ करोड़ लोगों के सामने झूठ बोलता है!

श्री विजेन्द्र गुप्ता :सर ये अनपार्लियामेंट्री भाषा है।

श्री नितिन त्यागी : सर, मैंने क्वेश्चन लगाया। सर, ये अनपार्लियामेंट्री नहीं है। सर, क्वेश्चन लगाया है।

अध्यक्ष महोदय : विजेन्द्र जी आप बोल लेते हैं। आप सी. एम., डिप्टी सी. एम. कुछ बोलें तो आप झूठ शब्द का इस्तेमालकर लेते हैं, और कोई न करे।

श्री नितिन त्यागी : आप बाहर चले जाइये। कोई टेंशन नहीं है। मैं तो बोलूंगा। देखिए सर, 'मुल्क ने मांगी थी उजाले की फखत एक किरण, वाह! बोलिये।

'मुल्क ने मांगी थी उजाले की फखत एक किरण,
निजाम ने हुक्म दिया, चलो आग लगा दो।'

हम लोग जो यहां पर बैठे हैं, कम से कम हम लोग उधर के छोड़ दीजिए। हमारे दिल्ली के लोग, दिल्ली की जनता, देश की जनता, कोई भी काले धन के खिलाफ चल रही मुहिम के खिलाफ नहीं है। अगर होते तो 67 सीटें नहीं आती। हम लोग, काले धन के खिलाफ कोई भी एक्शन होगा, उसके साथ हैं पर परेशानी कुछ और है। 2013 में वही माननीय प्रधानमंत्री जी, जब प्रधानमंत्री नहीं थे। उतने माननीय भी नहीं थे। उन्हीं का वक्तव्य देखा कि देश का बच्चा-बच्चा जानता है कि काला धन कहां है, स्विस बैंक में! 648 नाम आ चुके थे और अचानक से पीछे से सन्नाटे में वो कब कालाधन देश में ले आये, 125 करोड़ की जनता में बांट दिया और उनसे कहा, चलो बैंकों की लाइन में लगकर कालाधन वापस कर दो। सर, यह बात भी समझ में नहीं आई। उन्होंने जापान में कहा कि आज जो ईमानदार है, वो चैन से सो रहा है, पर उनको बोलना चाहूंगा कि ये लोग जो लाइन में लगे हुए हैं, ये लोग बेईमान नहीं है साहब! ये लोग मजबूर हैं। विजेन्द्र जी, सुनियेगा और संवेदना हो तो समझियेगा और फील कीजियेगा इस पर, ये लोग चैन से सो नहीं पा रहे हैं जो लाइन में लगे हैं। सुबह चार बजे से लग जाते हैं लाइन में, सारा दिन लाइन में लगने के बाद भी नंबर नहीं आता है। इन लोगों को बेईमान बोलते हैं हमारे प्रधानमंत्री जी, तो दुख होता है। दुख होता

है जब इनको बेईमान बोलते हैं प्रधानमंत्री जी। कुछ लोग सोशल मीडिया में लिखते हैं कुछ बीजेपी के नेता, मैं कई बार डिबेट पर भी जाता हूं सर, वहां पर ये बोलते हैं कि जिस वक्त 'जियो' सिम लेने के लिए खड़े होते हो तो लाइन में लगते हुए टेंशन नहीं होती, जिस वक्त 'इंडियन आइडल' की लाइन में लगते हो तो टेंशन नहीं होती, क्रिकेट मैच देखने लगते हो तो टेंशन नहीं होती। अरे! वो शौक है, यह मजबूरी है। कोई गरीब आदमी अगर 'जियो' सिम लेता है तो इसलिए नहीं लेता कि उसे टिव्ट करना होता है, वो इसलिए लेता है कि अपने गांव में, अपने बूढ़े मां-बाप से बात कर सके, उनका हाल-चाल पूछ सके और कुछ पैसे बचा ले इस बात को लेकर, क्योंकि आना पाई उसके लिए जरूरी है। एक मजदूर सारे दिन मजदूरी करता है, सारा दिन मजदूरी करके उसके घर का चूल्हा जलता है, एक रिक्शे वाला पूरे दिन रिक्शा चलाता है तो इतना कमा पाता है कि उसके घर का चूल्हा जले। उसके बस की बात ही है कि पूरे दिन शौक में लाइन में खड़ा हो जाये। उसकी मजबूरी होगी, तब वो जाकर लाइन में लगता है। कई लोग हैं। कहते हैं डेबिट कार्ड से काम चला लो, क्रेडिट कार्ड से काम चला लो, चैक से काम चला लो, जो लोग हमारे घरों में आते हैं हमारी मदद के लिए, हमारे घर के चूल्हा चौका करते हैं, बर्तन धोते हैं, कपड़े प्रेस करते हैं, गाड़ी साफ करते हैं, गाड़ी चलाते हैं, झाड़ू-पोंछा करते हैं, ये लोग जो बोलते हैं डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड ये लोग जाकर लाइन में लगेंगे, उनको पैसा दिलवाने के लिए? एक दिन भी बैंक में लगेंगे लाइन मे? खुद तो डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड से कार चला रहे हैं, उनको क्या दे रहे हैं ये पुराने पांच के नोट ले जाओ, तुम तो लाइन में लग सकते हो। ऐसा भी नहीं होना चाहिए। लोग अपने गांव से आते हैं दिल्ली में।

अध्यक्ष महोदय : कन्क्लूड कीजिए प्लीज।

श्री नितिन त्यागी : सर, थोड़ा सा सुनिए। सालों तक मेहनत करते हैं। किसलिए करते हैं कि कुछ पैसा जोड़ लें, अपने गांव में जाएंगे, अपना घर पक्का करवा लेंगे। वो गांव में जाकर डेबिट कार्ड से ईंट खरीदेगा! लोग इसलिए पैसा जोड़ते हैं कि बेटी की शादी करानी है। अभी अल्का बहन ने बताया कि बेटी की शादी कराने के चक्कर में कितना बुरा हाल हुआ! पैसे कन्वर्ट नहीं करवा पा रहे! लोग इसलिए पैसा जोड़ते हैं? हमारे देश में यह करप्ट इंस्टीट्यूट वाले कैपिटेशन लेते हैं कैश में, उनको कौन रोकेगा? इसलिए पैसा जोड़ते हैं कि अपने बच्चे का एडमिशन करवा लें और जब ये लोग कई साल तक जोड़ते हैं और जब ये लोग जाकर जमा करेंगे तो उनको आप करप्ट कह दोगे! उनके धन को काला धन कह दोगे! उस पर पैनल्टी लगाओगे! ऐसा नहीं हो पायेगा! किसान... उसकी फसल खरीदने वाला नहीं है। क्यों नहीं है? क्योंकि आढ़ती उसको पैसे नहीं दे पा रहा। क्योंकि दुकानदार उसको पैसे नहीं दे पा रहा। दुकानदार को ग्राहक पैसे नहीं दे पा रहा, पूरी साइकिल खराब हो गई! लोग लाइन में लगे हैं। मैं किसी की बुराई नहीं करना चाहता। मैं माननीय प्रधानमंत्री जी की भी बुराई नहीं करना चाहता। मैं विजेन्द्र गुप्ता जी जो एलओपी है हमारे, उनकी भी बुराई नहीं करना चाहता। लेकिन जो चारों तरफ देख रहा हूं सर, वो तो बोलूंगा। मैं अस्पतालों में जाता हूं, अधिकांश हम लोग जाते हैं अस्पतालों में, वहां पर मरीजों का दर्द देखते हैं।

अध्यक्ष महोदय : नितिन जी, कन्क्लूड कीजिए।

श्री नितिन त्यागी : सर, बिल्कुल कर रहा हूं। सर, बीमारों को, बुजुर्गों को, दिव्यांगों को लाइन में लगे हुए देखते हैं, उनकी मजबूरी को देखते हैं,

उनके चेहरे के दर्द को देखते हैं। जो लोग उस मजबूरी का मजाक उड़ा रहे हैं, उस गुस्से का मजाक उड़ा रहे हैं, वो समझें कि यह गुस्सा कहीं गलत तरीके से न निकल जाये। सर, एक चीज कहूंगा, देखिये, गलती होना मानवीय स्वभाव है। हमेशा सही होना, संभव नहीं है तो अपने अहंकार को माननीय प्रधानमंत्री जी को छोड़ना चाहिए, अपने अहं को छोड़ना चाहिए और देश में जो उन्होंने हा-हाकर मचवा दिया है, उसके लिए थोड़ा सा शांत कराना चाहिए, धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय : बहुत-बहुत धन्यवाद। विजेन्द्र गुप्ता जी।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : अध्यक्ष जी, मैं चाहता हूं जगदीश को बोलने दें।

अध्यक्ष महोदय : बोल चुके हैं।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : अच्छा बोल चुके!

अध्यक्ष महोदय : राजेश जी, प्लीज, समय की थोड़ी सी सीमा है हमारे पास।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : अध्यक्ष जी, कल शाम को फोन आया विधान सभा से कि कल सत्र है तो मन को बहुत पीड़ा हुई कि दिल्ली की विधान सभा का सत्र कल फोन पर बुलाया जा रहा है। नियम और कानून की धज्जियां उड़ाई जा रही हैं और पूरी तरह से कानून, नियम, संविधान और परंपराएं सभी की एक प्रकार से अवहेलना हो रही है। विषय कोई नहीं पता था उसमें, न कुछ जानकारी दी गई। विशेष सत्र पिछले 22 वर्ष में तीन बार हुए थे; एक बार हुआ था जब सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली में पॉल्यूटेड फैक्ट्रीज को रिहायशी इलाकों में बंद करने का आदेश जारी किया था। जो दिल्ली सरकार का विषय

था सीधे तौर पर और दिल्ली सरकार को ही उसकी व्यवस्था करनी थी, उस आदेश का पालन करना था। दूसरा विशेष सत्र हुआ था जब सी. एन. जी. की बसेज चलेंगी, सुप्रीम कोर्ट के ओदश का पालन करना था। दूसरा विशेष सत्र हुआ था जब सी. एन. जी. की बसेज चलेंगी सुप्रीम कोर्ट के आदेश से और बाकी ट्रांसपोर्ट में पब्लिक वेहिकल में बसेज नहीं चलेंगी। उस समय भी वो विषय पूरी तरह से दिल्ली सरकार का था और तीसरा केंद्र सरकार ने दिल्ली सरकार से एक प्रस्ताव मांगा था स्टेटहुड का, उनकी राय लेने के लिए, वो समय सीमा में मांगा गया था, उसके लिए सदन की बैठक हुई थी लेकिन पिछले दो वर्षों में लगभग आधा दर्जन बार! अगर मैं इनकी विस्तृत जानकारी लूंगा तो शायद हो सकता है इससे ज्यादा हों, विशेष सत्र बुलाये गये और उन विशेष सत्रों में एक बार भी ऐसा विषय नहीं था जो दिल्ली सरकार के अधिकार क्षेत्र का हो। क्योंकि जब चर्चा होती है तो उस पर मंत्री रिप्लाई करते हैं। वो उसका मंत्री जवाब देते हुए, उसके लागू करने के प्रति सरकार आश्वस्त करती है लेकिन में देख रहा हूं, मुझे यह समझ में नहीं आ रहा कि मुख्यंत्री जी के प्रस्ताव पर कौन से मंत्री कन्क्लूड करेंगे और क्या सरकार आश्वास देगी! क्या सरकार ऐसे प्रस्ताव ला रही है जो न किसी विभाग के अंतर्गत आ रहे हैं, न किसी मंत्रालय के अधिकार क्षेत्र में हैं और न ही किसी मंत्री के अधिकार क्षेत्र में। अध्यक्ष जी, भारत के इतिहास में 870 वर्षों में....

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : राजेश जी, प्लीज।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : अगर जिनकी दुकानें बंद हुई हैं, जिन पर ताले पड़ गये हैं, उनमें एक तो नकली नोट छापने वाले लोगों की दुकानों पर ताले पड़ गये हैं, उनके धंधों पर ताले पड़ गये हैं जो नकली नोट देश की अर्थव्यवस्था को बिगाड़ने के लिए लाखों-करोड़ रूपया...

...(व्यवधान)

श्री नितिन त्यागी : सर, गांधी नगर की एक-एक दुकान पर ताला पड़ा हुआ है।

...(व्यवधान)

श्री विजेन्द्र गुप्ता : मैं तो नहीं बोला था।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : नितिन जी, प्लीज बैठिए।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : उन राजनीतिक दलों के दफ्तरों में ताले पड़ गये जो कालेधन से चुनाव की तैयारी कर रहे थे। अब उसमें समाजवादी पार्टी भी हो सकती है, बहुजन समाज भी हो सकती है, आम आदमी पार्टी भी हो सकती है, कांग्रेस भी हो सकती है। इसलिए जो लोग भ्रष्टाचार मिटाने की बात कर रहे थे, वो भ्रष्टाचारी के सबसे बड़े पैरोकार बन गये है।। उसमें दिल्ली में जो सत्तारूढ़ दल है, वो भी उसका हिस्सा है। आतंकवादी गतिविधियों पर इसका असर पड़ा है। कश्मीर के अंदर स्टोन पेल्टिंग और आतंकवादी गतिविधि यां, देशद्रोहियों की गतिविधियां पाकिस्तान से जो इनफिल्ट्रेशन की जा रही थी, उस पर...

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : नितिन जी, प्लीज।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : उस पर एक बड़ा असर पड़ा है और आज स्थिति यह है कि या तो देश की विपक्षी पार्टियों के यहां अंडरग्राउंड मीटिंग्स हो रही हैं कालेधन को लेकर या आतंकवादी गतिविधि चलाने वाले या पाकिस्तान में बैठे हुए लोग जो हिंदुस्तान की करंसी या ड्रग्स का धंधा करते थे या नकली नोट छापने वाले, ये बड़ी अजीब और विचित्र स्थिति है! क्या देश की राजनीतिक पार्टियां जिसमें आम आदमी पार्टी भी है, वो नकली नोट, आतंकवाद, ड्रग बेचने वाले और देशद्रोहियों की सूची में आकर खड़ी हो गई है और उन भ्रष्टाचारियों के साथ आकर खड़ी हो गई है।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : प्लीज, प्लीज, नितिन जी, प्लीज।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : तो मैं इतना कहूंगा, मैं इतना कहूंगा कि भ्रष्टाचारियों की संदूक और गरीब का कंधा और केजरीवाल की बंदूक यानी कि गरीब का कंधा इस्तेमाल किया जा रहा है और केजरीवाल जी बंदूक चला रहे हैं भ्रष्टाचारियों की संदूक के सहारे...

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : जगदीप जी, बैठिए प्लीज।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : अब सवाल ये है कि आम आदमी की परेशानी।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : जगदीप जी, प्लीज, जगदीप जी।

...(व्यवधान)

श्री विजेन्द्र गुप्ता : अगर सकारात्मक चर्चा यहां की जाती, उसको हल करने की... क्योंकि जो लाइन में खड़ा है, वो अपने आप को देशभक्ति के इस पूरे महायज्ञ में अपनी आहूति मान रहा है।

श्रीमती सरिता सिंह : एक बार लाइन में खड़े हो जाओ जाकर तब पता चलेगा।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : और...

श्री नितिन त्यागी : आहूति हो जायेगी तुम्हारी।

श्रीमती सरिता सिंह : आहूति आपकी हो जायेगी।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : मैं इतना कहूंगा अध्यक्ष जी कि लोगों को कोई तकलीफ नहीं है। वो कहते हैं हम तकलीफ उठाने के लिए तैयार हैं। ऐसा नहीं है कि हम लोगों की तकलीफ को कम करके आंक रहे हैं लेकिन उनका जज्बा देखकर, उनकी देशभक्ति देखकर और विषय यह बन गया कि देश की जनता परेशानी झेलने को तैयार है लेकिन देश की राजनीतिक पार्टियां, विरोधी पार्टियां इस तकलीफ को सहन करने के लिए तैयार नहीं हैं क्योंकि उनका जो कुछ हश्र हुआ है वो सब जानते हैं, तो गरीब का कंधा का और केजरीवाल का जो भ्रष्टाचारियों की संदूक और केजरीवाल की बंदूक ये दोनों एक साथ चल रही हैं। अब केजरीवाल जी एक बार भी ये नही कहने को तैयार, दिल्ली के मुख्यमंत्री कि मैं जो आम आदमियों का नाम लेकर जो नोटबंदी को वापस लेने की बात कर रहा हूं, इससे भ्रष्टाचारियों को फायदा होगा, नकली

नोट वालों को भी फायदा होगा। अगर वो ये कहकर कि हां, नकली नोट वालों को फायदा हो जायेगा। अगर वो कहें कि आतंकवादियों को फायदा हो जायेगा, मैं मानता हूं। ड्रग का धंधा करने वालों का फायदा हो जायेगा। भ्रष्टाचारियों को फायदा हो जायेगा। लेकिन मेरा यह कहना है कि उनका फायदा हो जायेगा। भ्रष्टाचारियों को फायदा हो जायेगा। लेकिन मेरा यह कहना है कि उनका फायदा होने दो पर आम आदमी को तकलीफ नहीं हो। आप रिजोल्यूशन में स्पष्ट करिये देश की जनता के सामने कि क्या जो लोगों की तकलीफ है, वो काला धंधा करने वालों से, भ्रष्टाचार करने वालों से, ड्रग्स बेचने वालों से, ड्रग्स बेचने वालों से, देशद्रोही और जाली नोट छापने वालों की समस्या जो इससे खड़ी हुई है, उससे ज्यादा बड़ी समस्या है तीन घंटे कोई लाइन में अगर खड़ा हो गया तो हम आपकी बात को तर्कसंगत मान लेंगे। लेकिन आप तर्कसंगत बात नहीं कर रहे हैं। अगर आप तर्कसंगत बात करते... ये अपने भाषण में आप जरूर बताइये जो जो मैंने सवाल खड़े करें हैं कि क्या ड्रग बेचने वालों को इससे नुकसान होगा? आप बताइये होगा कि नहीं होगा? अगर आप कुछ नहीं बतायेंगे तो इसका मतलब कहीं न कहीं आप उनको... एक सेकेंड।

अध्यक्ष महोदय : आप अपनी बात रखिये।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : अध्यक्ष जी, मुझे अपनी बात कहने दीजिये।

अध्यक्ष महोदय : नहीं, समय हो रहा है भई।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : बहुत महत्वपूर्ण बात है नकली नोट बनाने वालों का भारी नुकसान होगा, इसके बारे में आप कहिये, हां, होगा और या नहीं होगा। आतंकवादी गतिविधि चलाने में, स्मगलिंग करने वालों में जो स्मगलिंग करते हें, जो दो नम्बर में हवाला करते हैं और जो राजनीतिक पार्टियां अगर उनकी

पार्टी के पास कालाधन नहीं है तो वो कहें कि हां, जिनके पास काला धन है, उनका नुकसान होगा या नहीं होगा, अगर नहीं होगा तो बतायें, होगा तो ये जो विषय मैंने यहां रखे हैं, इनके बारे में वो बतायें। कल मुख्यमंत्री जी ने एक बहुत गैर-जिम्मेदार बात कही है। दो दिन पहले भी कही, कल भी कही है, उसके बारे में भी स्थिति स्पष्ट करें और इस रेजोल्यूशन में भी चेतावनी दी है, जो इसकी भाषा नहीं होनी चाहिए थी रेजोल्यूशन की...

अध्यक्ष महोदय : विजेन्द्र जी, अब कन्क्लूडक करिये। विजेन्द्र जी, कन्क्लूड करिये।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : इसमें इन्होंने चेतावनी दी है कि अगर ये नोटबंदी का फैसला वापस नहीं होगा तो देश में दंगे हो जायेंगे, लॉ-एंड-आर्डर खराब हो जायेगा। अब एक प्रदेश का मुख्यमंत्री इतनी गैर जिम्मेदार बात कर सकता है कि लोगों को भड़काने के लिये, वो इस तरह की भाषा का प्रयोग कर रहा है। मुझे गहरा दुख है कि मैं इस सदन का सदस्य हूं जिसके मुख्यमंत्री इस तरह की बात कहते हैं। उनको लोगों में...

अध्यक्ष महोदय : कन्क्लूड करिये अब।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : आप वार्निंग दे रहे हैं, थ्रैट कर रहे हैं। लोग जानते हैं और समझते हैं, लोग आपकी भाषा में और आपकी बातों में आने वाले नहीं हैं। आप कितनी भी कोशिश करें दंगे करवाने की, लॉ-एंड-ऑर्डर को खराब करने की, ये देश की आपकी बातों में आने वाला नहीं है। ये देश के लोगों ने सोच लिया है कि हमको भ्रष्टाचार समाप्त करना है। अभी यहां मेरे सभी साथी दोस्त बार-बार...

अध्यक्ष महोदय : अब कन्क्लूड करिये विजेन्द्र जी, प्लीज।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : ...ये पहले से पता था वो वहां रखा हुआ था, अरे! जब आपके पास इतनी जानकारी है तो आपने एफआईआर क्यों नहीं कराई अभी तक? एफआईआर क्यों नहीं कराई? क्या आपने कहीं कंप्लेंट की है कि इस व्यक्ति के पास पहले से... इसने पैसे को ठिकाने लगाया है।

अध्यक्ष महोदय : कन्क्लूड करिये प्लीज।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : ....आपने एफआईआर कराई?

अध्यक्ष महोदय : विजेन्द्र जी, अब कन्क्लूड करिये।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : मैं कहना चाहता हूं कि आपने इसकी कहां शिकायत करी? जो बातें आप राजनीतिक तौर पर बोल रहे हैं अगर वो तथ्यों पर आधारित हैं तो आपने उसकी एफआईआर अभी तक क्यों नहीं कराई? कहां उसकी कंप्लेंट की? आपकी कंप्लेंट परक्या कार्रवाई हुई, ये हमको बतायें।

अध्यक्ष महोदय : विजेन्द्र जी, अब कन्क्लूड करिये, प्लीज विजेन्द्र जी, विजेन्द्र जी, अब कन्क्लूड करिये।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : माननीय अध्यक्ष जी, मुझे इतना कहा है कि ऐसी की भाषा का प्रयोग करना, लोगों को भड़काने की कोशिश करना....

अध्यक्ष महोदय : विजेन्द्र जी, आप कन्क्लूड करिये, प्लीज, देखिये पंद्रह मिनट हो गये।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : और छुपा हुआ एजेंडा कि किसी तरह भी भ्रष्टाचारियों का साथ देना! आम आदमी पार्टी जो कहकर सत्ता में आई थी, उसके विपरीत

व्यवहार कर रही है। लोग समझ रहे हैं, जान रहे हैं। परेशानी तो चार-छह दिन में दूर हो जायेगी, लोगों को भी पता है लेकिन आपके दिये हुए गहरे घाव भ्रष्टाचार, भ्रष्टाचार के समर्थन के दिये हुए गहरे घाव... मैं आम आदमी पार्टी को बताना चाहता हूं, ये अब धुलने वाले नहीं हैं। लोग समझ गये हैं कि आप चार दिन लाइन में खड़े हुए लोगों का बहाना लेकर भ्रष्टाचारियों का सहयोग कर रहे हैं, धन्यवाद।

श्री अनिल बाजपेयी : सर जी, मैं इनकी बात का।

अध्यक्ष महोदय : नहीं, अब नहीं प्लीज, प्लीज बाजपेयी जी, प्लीज, नहीं अब समय नहीं है, बात को समझिए, डिप्टी सीएम साहब, उप मुख्यमंत्री जी।

श्री अनिल बाजपेयी : एक मिनट दे दो सर।

अध्यक्ष महोदय : आपने मुझे कहा था, लिखकर भेजा किंतु अब समय नहीं है। थोड़ा सा समझिए, माननीय मनीष जी।

उप मुख्यमंत्री : अध्यक्ष महोदय, हमारे विधायक साथी जिस बात पर प्रतिक्रिया देना चाह रहे हैं, मैं उसको समझ रहा हूं और उन सबकी पीड़ा ही आज इस सदन को यहां बैठने पर मजबूर कर रही है कि वो जिस जनता की पीड़ा को रिप्रजेंट कर रहे हैं। मैं, क्योंकि मुख्यमंत्री जी को भी बोलना है और क्योंकि यह सब इमरजेंसी में मीटिंग बुलाई गई थी, बहुत दो मिनट में अपनी बात रखना चाहता हूं अध्यक्ष महोदय। एक तो अभी में कहीं पढ़ रहा था, बड़ा अच्छा एनालिसिस किया है किसी ने कि अगर घर में कीड़े मकोड़े या कॉकरोच घुस आये तो पेस्ट कंट्रोल करना चाहिए, घर को आग

नहीं लगानी चाहिए। मोदी जी ने क्या कर दिया कि घर को आग ही लगा दी। कालेधन वाले लोग हैं, इससे कोई शंका नहीं है लेकिन वहां पेस्ट कंट्रोल करने की जगह आपने पूरे घर को आगे लगा दी। अब उसमें रहने वाले इंसान, बच्चे, बूढ़े, बुजुर्ग, महिलाएं सबको आग लग गई, सब मर रहे हैं और आप तमाशा देख रहे हैं। आप नोटों पर राजनीति कर रहे हैं। पता नहीं क्या-क्या ड्रामा कर रहे हैं। हमको तो आती भी नहीं है इस तरह की। हमको तो इतनी एक्टिंग भी नहीं आती इस तरह से। तो अध्यक्ष महोदय, देश में जिस तरह के हालात पैदा हुए हैं और दिल्ली में... मैं अलका जी के साथ में मार्किट में गया था। अलग-अलग तरह के लोग, व्यापारी, सब लो आके मिल रहे हैं। जिस वक्त ये घोषणा हुई थी, उस वक्त मैं भी टीवी देख रहा था और शुरूआत में पॉलिटिकल डिफरेन्सेज हमारे हो सकते हैं लेकिन मुझे भी लगा कि एक बार को तो करारी चोट लगेगी अगर एक हजार का और पांच सौ रूपये का नोट बंद हुआ। परंतु पांच मिनट बाद ही मोदी जी ने कहा हम बंद नहीं कर रहे हैं, हम तो बदल रहे हैं और दो हजार का और ला रहे हैं तो मुझे ये लगा ये एक हजार का नोट बंद करके थोड़े दिन के लिए वापस ले आएं, पांच सौ का वापस ले आएंगे और दो हजार का नोट और ले आएंगे। इससे कैसे काला धन कम होगा देश में! शुरू में मुझे लगा कि एक बड़ी देश में चर्चा थी इस मुद्दे पर हो सकता है कुछ हो। उम्मीद थी पर जिस तरह से दो हजार का नोट लाने की भी बात आ गई तो बड़ा दुख हुआ, फिर भी हम दो दिन चुप रहे। मुझे लगा शायद कुछ निकलेगा, कुछ निकलेगा। हो सकता है कुछ सोच समझ कर किया हो। देश के प्रधानमंत्री ने कुछ फैसला लिया है तो! लेकिन जिस तरह के हालात बाजार में बने हुए हैं और जिस तरह की सारे सदस्यों ने चर्चा की है, मुझे लग रहा है कि ये बहुत गंभीर है।

इस वक्त देश में और जो सदस्य साथी बोलना चाह रहे थे, इसीलिये मैंने कहा कि सबकी तरफ से मैं कहना चाहता हूं, पूरे दिल्ली का व्यापारी, पूरी दिल्ली का मजदूर, दिहाड़ी मजदूर, पूरी दिल्ली की आम महिला, सब दुखी हैं। जरूर इस प्रस्ताव को न सिर्फ पास किया जाये बल्कि माननीय राष्ट्रपति जी से भी न्टरवीन करने की भी मांग की जाये जैसा कि इसमें उल्लेखित है, थैंक्य यू।

अध्यक्ष महोदय : माननीय मुख्य मंत्री श्री अरविंद केजरी वाल जी।

मुख्यमंत्री का वक्तव्य

मुख्य मंत्री (श्री अरविंद केजरीवाल) : आदरणीय अध्यक्ष महोदय, इस वक्त दिल्ली में, पूरे देश में अफरा-तफरी का माहौल बना हुआ है। आठ नवंबर को नोटबंदी का ऐलान करते वक्त प्रधानमंत्री जी ने कहा था कि वो काले धन के ऊपर बहुत बड़ा वार करने जा रहे हैं, काले धन के खिलाफ एक तरह से युद्ध छेड़ने जा रहे हैं लेकिन उनकी कथनी और करनी में बहुत बड़ा अंतर नजर आ रहा है। एक तरफ उन्होंने इस देश के सारे आम आदमी को, मिडिल क्लास को, गरीब लोगों को लाइनों में लगा दिया, सवा सौ करोड़ लोगों को लाइनों में लगा दिया। वहीं पर जिन लोगों के पास इस देश में सबसे ज्यादा काला धन है, जो मोदी जी के दोस्त हैं उनके ऊपर किसी तरह की कार्रवाई नहीं हो रही है। सारा देश जानता है कि सबसे ज्यादा काला धन इस देश के अंदर किसके पास है। हम लोगों ने देखा कि किस तरह से ये खबर है, "Bride's father in Bihar Kamoor suffers stroke." एक दुल्हन के पिता को हार्ट अटैक हो गया क्योंकि वो अपने नोट नहीं बदल पाया। उसके यहां शादी नहीं हुई। बेटी की शादी की चिंता को लेकर मां ने की खुदकुशी! देश के अंदर जगह जगह घरों में शादियां टूट रही हैं, जगह जगह घरों में नोट न

होने की वजह से, नोट न बदले जाने की वजह से किसी की आत्महत्या हो रही है, किसी को हार्ट अटैक हो रहा है लेकिन भारतीय जनता पार्टी के बहुत बड़े दोस्त हैं, माइनिंग स्कैम में जिनका नाम आया था जनार्दन रेड्डी, कर्नाटका के बहुत बड़े नेता हैं। कल उनकी बेटी की शादी है, बारह नवंबर से शादी की तैयारियां शुरू हो चुकी हैं। पांच सौ करोड़ रूपये... अखबारों में छपा है। मेरे को तो पता नहीं, पांच सौ करोड़ रूपये शादी में खर्च हो रहे हैं, उनको पांच-पांच सौ के, हजार हजार के नोट बदलने की दिक्कत नहीं आ रही। हम तो पहले से ही कह रहे थे कि जो मोदी जी के दोस्त हैं, उनके लिये कोई तकलीफ नहीं है उनको सबको...

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : बिल्कुल नहीं, विजेन्द्र जी।

मुख्यमंत्री : उनके अपने नोट बदले जायेंगे, ये हम जानना चाहते हैं?

अध्यक्ष महोदय : उन्होंने किसका नाम लिया है? क्या लिया है? बैठिए प्लीज।

...(व्यवधान)

मुख्यमंत्री : मैं मार्किट में गया। मार्किट में व्यापारी कह रहे हैं इन्कम टैक्स वाले घूम रहे हैं। छोटी छोटी दुकानों पर जा रहे हैं। दुकान वालों के ठप्पे लगा रहे हैं जनार्दन रेड्डी की बेटी की शादी के अंदर क्यों नहीं जा रहे इन्कम टैक्स वाले! जनार्दन रेड्डी को कहां से दो दो हजार के नोट मिल गये! जनार्दन रेड्डी के यहां क्यों नहीं ईडी वाले जा रहे? क्यों नहीं सीबीआई वाले जा रहे? क्योंकि जनार्दन रेड्डी भाजपा के दोस्त हैं। विजय माल्या आठ

हजार करोड़ रूपये ले के... उनको भगा दिया भाजपा ने! विजय माल्याको इस देश से भगा दिया। आठ हजार करोड़ रूपये ले के... उनको भगा दिया भाजपा ने! विजय माल्या को इस देश से भगा दिया। आठ हजार करोड़ रूपये का उनके ऊपर लोन है। उनको भगा दिया भाजपा वालों ने और रोज खड़े हो के टीवी चैनल में धमाकी दे रहे हैं कि ढाई लाख रूपये अगर तुमने जमा करा दिये तो तुमको छोड़ेंगे नहीं। ढाई लाख रूपये वालों के पीछे पड़े हुए हैं, विजय माल्या, आठ हजार करोड़ रूपये जिसके ऊपर बकाया थे, उसको रातों रात एयरपोर्ट से भगा दिया बीजेपी वालों ने! क्या रिश्ता था जी विजय माल्या से? एक लाख चौदह हजार करोड़ रूपये का बड़े बीजेपी वालों ने! क्या रिश्ता था जी विजय माल्या से? एक लाख चौदह हजार करोड़ रूपये का बड़े बड़े धनाढ्यों का, अरबपतियों का एक लाख चौदह हजार करोड़ रूपया माफ कर दिया। लोन का एक लाख चौदह हजार करोड़ रूपया! सुप्रीम कोर्ट कह रहा है, बताओ उनके नाम किस किस का माफ किया? कह रहे हैं, नाम नहीं बतायेंगे। पता चल जायेगा, कौन कौन इनके दोस्त हैं। एक लाख चौदह हजार करोड़ रूपये, छोटा नहीं होता जी! एक लाख चौदह हजार करोड़ रूपया माफ कर दिया और धमकी दे रहे हैं ढाई लाख रूपये जमा करा दिया तो छोड़ेंगे नहीं तुमको। ढाई लाख रूपये! गरीबों से दुश्मनी है इनकी। ये अमीरों की पार्टी है। अमीर लोग इनके दोस्त है। 2011 में 68 लोगों की लिस्ट आई थी। उसमें इस देश के सारे बड़े, सारे अरबपतियों के नाम थे। उसमें से कुछ लोगों के नाम मेरे को पता चले थे। मैंने प्रेस कांफ्रेस करके बताया था, एकाउंट नंबर भी बताया था, स्विस बैंक एकाउंट नंबर। कांग्रेस मिली हुई थी उनके साथ। कांग्रेस ने एक्शन नहीं लिया उन 648 लोगों के खिलाफ। लेकिन अब मोदी जी भी कोई एक्शन नहीं ले रहे उनके खिलाफ। अरे! काला धन पकड़ना

था, उनके एकाउंट नंबर लिखे हुए हैं उस लिस्ट के अंदर, 648 लोगों ने। स्विटजरलैंड की सरकार को लिखने की देर थी कि भई इनके एकाउंट की डिटेल भेजो, इनको पकड़ेंगे। एक चिट्ठी भी नहीं लिखी मोदी जी ने स्विटरलैंड में!

श्री विजेन्द्र गुप्ता : मैं एक चीज फिर आपको बार-बार कह रहा हूं।

अध्यक्ष महोदय : भई देखिए, नहीं, विजेन्द्र जी, कोई ऐसा शब्द आयेगा मैं रोक दूंगा।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : बैठ जाइये बैठ जाइये आप। बैठ जाइये। आप छोड़ दीजिये ना। बिल्कुल नहीं, बैठ जाइए।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : बैठ जाइये। आप बैठ जाइये। बैठ जाइये आप। ठीक है छोड़ दीजिये।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मुख्यमंत्री : प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी जी के दोस्त हैं।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : पनामा लिस्ट आये हुए कितने दिन हो गये? उस पनामा लिस्ट के अंदर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के दोस्तों के नाम हैं।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : विजेन्द्र जी, ये तरीका ठीक नहीं है। ये तरीका ठीक नहीं है। बैठ जाइये।

...(व्यवधान)

मुख्यमंत्री : ये खबर है अखबार में...(व्यवधान) ये खबर ये कहती है कि जब मोदी सरकार आई थी पांच हजार चार सौ अड़सठ करोड़ रूपये अडानी साहब ने झूठे बिल बना के, इन्फ्लेटेड बिल बना के देश के बाहर भेज दिये। भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने आने के बाद ईडी के ऊपर जो जांच कर रहे थे, उनका तबादिला कर दिया। उनकी ऐसी तैसी कर दी। जांच बंद कर दी। तुम ढाई लाख जमा कराने वालों से पैसे लोगे! अडानी से पैसे नहीं लोगे; पांच हजार चार सौ अड़सठ करोड़... मैं एग्जैट एमाउंट बता रहा हूं। पांच हजार चार सौ अड़सठ करोड़ रूपये उसने देश के बाहर भेज दिये। उसके खिलाफ एकशन नहीं लेंगे। आज कहते हैं हम काले धन पर वार कर रहे हैं आप काले धन पर वार नहीं कर रहे। ये कागज, मेरे कागज नहीं है, ये इन्कम टैक्स डिपार्टमेंट के कागज हैं।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : वो जो कहना चाहें, लेकिन नाम ना लें...

मुख्यमंत्री : इन्कम टैक्स डिपार्टमेंट ने 15 अक्टूबर....

अध्यक्ष महोदय : विजेन्द्र जी, आप इंटरेप्ट कर रहे हैं। आप बैठिए प्लीज।...

श्री विजेन्द्र गुप्ता : आप बताइये मुझे। ये रूल बुक का क्या होगा?

अध्यक्ष महोदय : आप बैठिए प्लीज... मुझे निर्णय क्या लेना है, मैं निर्णय

ले लूंगा अभी।... आप बैठिए प्लीज, उनको इंटरेप्ट मत करिए, मैं रूल कर दूंगा।...

श्री विजेन्द्र गुप्ता : आप कहिए उनको।

अध्यक्ष महोदय : मुझे जो कहना है...

श्री विजेन्द्र गुप्ता : कोई भी मैम्बर बोलेगा...

अध्यक्ष महोदय : आप बैठिए प्लीज।...

मुख्यमंत्री : उस आधार के ऊपर आप अपनी रिपोर्ट बनाते हो। उस रिपोर्ट को इन्कम टैक्स की रिपोर्ट को अप्रजेल रिपोर्ट कहते हैं। अप्रजेल रिपोर्ट है इंकम टैक्स डिपार्टमेंट की...

अध्यक्ष महोदय : आप बैठिए, प्लीज बैठिए प्लीज...

श्री विजेन्द्र गुप्ता : इंस्ट्रक्शन दीजिए...

अध्यक्ष महोदय : आप बैठिए विजेन्द्र जी... प्लीज बैठिए, इंटरेप्ट मत करिए प्लीज।....

श्री विजेन्द्र गुप्ता : आप प्रधानमंत्री जी का नाम लेकर बोल रहे हैं आप...

मुख्यमंत्री : रेड के दौरान उनके एकाउंट आफीसर से पूछा गया...

श्री विजेन्द्र गुप्ता : इंस्ट्रक्शन दीजिए...

अध्यक्ष महोदय : देखिए विजेन्द्र जी, मैं आपसे बार-बार प्रार्थना कर रहा हूं,... मैं कर लूंगा। मुझे मालूम है।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : आप दीजिए।...

अध्यक्ष महोदय : मैं कर दूंगा अपने आप। अभी आप इंटरेप्ट मत करिए आप, आप बैठ जाइये प्लीज।

मुख्यमंत्री : एकाउंट आफीसर ने कहा कि मेरे दोस्त शुभेन्दू अमिताभ है...

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : चीफ मिनिस्टर बोल रहे हैं। मुख्यमंत्री बोल रहे हैं बैठ जाइये। आप बैठिए प्लीज।

मुख्यमंत्री : मैं हवाला का पैसा लेकर आता हूं और मुझे शुभेन्दू अमिताभ जहां-जहां कहते हैं, मैं उन-उन को पैसा देकर आता हूं...

अध्यक्ष महोदय : विजेंद्र जी, आप जब भी सदन बैठता है, बार-बार गड़बड़ करते हैं। मैं वार्निंग दे रहा हूं आपको। मुझे क्या निर्णय लेना है, मैं देखूंगा अपने आप... मैं आपसे कह रहा हूं आप बैठ जाइये। मैं मार्शल से रिकवेस्ट कर रहा हूं विजेंद्र जी को बाहर करें। विजेन्द्र जी को बाहर करें। मार्शल।... मैंने बहुत समय दिया आपको। आज आपने बहुत अवहेलना की है।... बाहर करिए, बाहर करिए आप।... विजेंद्र जी मैं आपसे, आप करिए बाहर करिए। या तो आप शांति से बैठिए। मैंने आपको मौका दिया, बार-बार मौका दिया। आप मान नहीं रहे हैं।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : विजेंद्र जी, अब क्या हर एक को धमकियां देते हैं

आप। आप करिए बाहर करिए। नहीं-नहीं, बाहर करिए अब। जो मुझे निर्णय लेना है, मैं लूंगा।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : अब चलिए, करिए करिए जल्दी करिए।...(व्यवधान) करिए अब जल्दी करिए। मैं चाहता था आप बैठें बराबर लेकिन अब मुझे क्या करना है, मैं देखू लूंगा, मुझे क्या करना है, मैं देखूंगा। चलिए ठीक है, कोई बात नहीं...

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : करिए, भई करिए।

(श्री विजेन्द्र गुप्ता को मार्शल द्वारा सदन से बाहर किया गया)

मुख्यमंत्री : मैं थोड़ा सा रिपीट कर देता हूं। 15 अक्टूबर, 2013 को आदित्य बिड़ला ग्रुप के ऊपर रेड हुई। उस रेड में इन्कम टैक्स डिपार्टमेंट में रेड होती है, वो वहां से सारे उनके कागज उठाकर लाते हैं। वापस आने के बाद इन्कम टैक्स डिपार्टमेंट अपनी एक रिपोर्ट बनाता है, उन कागजों के आधार पर जिसको एप्रेजल रिपोर्ट कहते हैं। ये एप्रेजल रिपोर्ट है इन्कम टैक्स डिपार्टमेंट की, उस रेड की। उस रेड में उनके एकाउटैंट से पूछा इन्कम टैक्स वालों ने, एकाउंटेंट का नाम कोई सक्सेना था। सक्सेना ने कहा, ''जी, मैं हवाला का पैसा लेकर आता हूं। मेरे बॉस हैं उनका नाम शुभेन्दू अमिताभ है। वो जिस-जिस को कहते हैं, मैं उनको पैसा जाकर बांट देता हूं।'' शुभेन्दू अमिताभ बिड़ला ग्रुप के ग्रुप एक्जीक्यूटिव प्रजीडेंट थे। शुभेन्दू अमिताभ के लैपटाप, फोन ब्लैकबेरी सब चैक किए गए तो उनके लैपटाप से एक एंट्री मिली। ये एंट्री

है 16 नवंबर, 2012 की। इसमें लिखा हुआ है, गुजरात सीएम 25 करोड़ रूपए। गुजरात सीएम के आगे 25 करोड़ रूपए। ब्रेकेट में लिखा है 12 डन। 1 दे दिए रेस्ट? तो शुभेन्दू अमिताभ का स्टेटमेंट लिया गया। उनसे पूछा गया कि ये गुजरात सीएम का क्या मतलब है? उनका जो स्टेटमेंट है, ये स्टेटमेंट लिया गया। उनसे पूछा गया कि ये गुजरात सीएम का क्या मतलब है? उनका जो स्टेटमेंट है, ये स्टेटमेंट की कापी है, जो शुभेन्दू अमिताभ का स्टेटमेंट लिया गया। स्टेटमेंट में उनसे पूछा गया कि ये गुजरात सीएम का क्या मतलब है? गुजरात सीएम कौन था उस टाइम? नरेंद्र मोदी जी, 2012 में। तो उनसे पूछा गया गुजरात सीएम का क्या मतलब है बोले, ''जी, गुजरात सीएम का मतलब है गुजरात एल्कली कैमिकल्स।'' तो उनसे पूछा गया कि ये गुजरात एल्कली कैमिकल कैसे हो गया? सी और एम का क्या मतलब है? दूसरे क्वैश्चन में पूछा गया, तो बोले ''गुजरात एल्कली कैमिकल्स।'' तो फिर तीसरे क्वैश्चन में उनसे पूछा गया कि क्या आपने इसके पहले कभी गुजरात एल्कली कैमिकल की शॉर्ट फॉम गुजरात सीएम कहीं भी अपने नोटस में इस्तेमाल की है या इसके बाद कभी की है? कहता है, ''न।'' उनसे पूछा गया कि क्या आपकी कंपनी में कोई गुजरात एल्कली कैमिकल को शॉर्ट फॉम में गुजरात सीएम लिखता है, बोले, ''न।'' तो ये उसके बाद इन्कम टैक्स डिपार्टमेंट ने अपनी एनालिसिस की है। ये उसके एनालिसिस की कापी है। एनालिसिस में इन्कम टैक्स डिपार्टमेंट लिखता है, "Considering the highly incriminating nature of tarnsactions in the data retrieved from the laptop and hard disk of Shubendu Amitabh and evasive repoles and unsubstantiated claims made by him, it would be imperative for the Assessing Officer to scrutinize the data available in the seized documents including the laptop and hard dsk and determined the quantum of income concealed by Sh. Shubendu Amitabh." इसका मतलब इन्कम टैक्स डिपार्टमेंट कह रहा है

कि ये झूठ बोल रहा है। एप्रेजल रिपोर्ट उसके बाद एससिंग ऑफीसर के पास जाती है और एससिंग ऑफिसर फिर दो साल लगाकर उसकी इन्कम का एस्समेंट करता है, आर्डर करता है। अक्टूबर 2013 में रेड हुई थी। उसके बाद छः महीने बाद इनकी सरकार आ गई तो एसेसिंग आफीसर की हिम्मत नही थी जो इसकी जांच कर सके उसके बाद। तो इसकी कोई जांच नहीं हुई उसके बाद और अब ये केस को रफा दफा करने की कोशिश की जा रही है, सेटलमेंट कमिशन में इस केस को भेज दिया और बहुत जल्दी ये केस खत्म होने वाला है। इस केस को रफा दफा करने की कोशिश की जा रही है।

एक और बड़ी मजे की बात है; इसी रिपोर्ट के अंदर बिड़ला ग्रुप के जो पैंडिंग प्रोजेक्ट हैं, गुजरात सरकार में उनकी लिस्ट दी हुई है। इससे शक पैदा होता है कि ये पैसे, ये काम करवाने के लिए दिए गए थे क्या? इसमें लिखा है "Levy of stamp duty, matter has been taken up at the principal Secretary level and through the hon'ble Chief Minister's Office, Deputy Collector stamp has been instructed from Gandhi Nagar not to initiate any action." मतलब मुख्यमंत्री दफ्तर, गुजरात के मुख्यमंत्री दफ्तर ने स्टैम्प ड्यूटी न लेने के आदेश दे दिए हैं। इनको गैस की जरूरत थी तो इसमें लिखा है कि गैस के लिए भी बात हो गई है तो जो-जो काम पैंडिंग थे गुजरात सरकार में, उनकी सबकी लिस्ट दी हुई है। तो एक मन से ये शक होता है, ये 25 करोड़ रूपए, ये सारे काम करवाने के लिए पैसे दिए गए थे क्या?

इसी के अंदर मोइली साहब का भी पैसे का लेन देन है। जयंती नटराजन का भी पैसे का लेन देन का है लेकिन सबसे बड़ी मजे की बात ये है कि ये रेड हुई थी 15 अक्टूबर, 2013 को। उस टाइम केंद्र में कांग्रेस की सरकार

थी। कांग्रेस की सरकार को अगर नरेंद्र मोदी जी का नाम किसी इन्कम टैक्स की रेड में मिला कि उन्होंने 25 करोड़ रूपए के लेन-देन की बात है तो कांग्रेस वालों को तो पूरे देश में हंगामा मचा देना चाहिए था। तब तक ये प्रधानमंत्री केंडिडेट एनाउंस हो चुक थे। कांग्रेस वालों ने भी कुछ नहीं बोला तो इसका मतलब कुछ न कुछ तो डील हुई कांग्रेस और बीजेपी वालों के अंदर। कुछ न कुछ कांग्रेस वालों को लगा होगा कि अब इनका आना तो पक्का है, इनसे डील कर लो भई, जब तुम आओगे तो रॉबर्ट वाड्रा का ख्याल रखना, तभी रॉबर्ट वाड्रा के खिलाफ कुछ हो नहीं रहा। ये तो पक्का बता रहा हूं, नरेंद्र मोदी जी का नाम है इसके अंदर।

अभी एक और इसी तरह का इंसीडेंट हुआ। अगर ये एक ही होता तो लगता कुछ गड़बड़ है। 22 नवंबर, 2014 को सहारा के यहां रेड हुई। एक कमरे से 130 करोड़ से ज्यादा का कैश मिला। वहीं पर कुछ कागज मिले उन कागजों में भी नरेंद्र मोदी जी का नाम है। मेरे पास सारे कागज आये नहीं, इसलिए वो कागज आज रख नहीं रहा। अभी कुछ कागज आने बाकी हैं। कुछ ही कागज आये हैं। जब सारे कागज आयेंगे, दुबारा अगले सैशन में रखेंगे, लेकिन मोटे-मोटे तौर पे जो मुझे पता चला है कि 400-500 करोड़ रुपये देने की बात है उन कागजों के अंदर और कई नेताओं के नाम हैं, कई मुख्यमंत्रियों के नाम है देश के, उनमें नरेंद्र मोदी जी का नाम भी है। अभी सारे कागज आये नहीं। सारे कागज आयेंगे तो आपके सामने रखेंगे। लेकिन अब इसकी जांच कौन करेगा! भारत के इतिहास में शायद आजादी के बाद आज पहली बार ऐसा हुआ है कि किसी प्रधानमंत्री का काला धन का जो खाता, बही खाता जो भी बड़ा उद्योग पति होता है, खरबपति होता है उसका एक,

एक नंबर का खोता होता है और एक काले धन का खाता है, इतने करोड़ों का पैसा ऐसे ही थोड़े ही दे देते हैं। काले धन के खातों के अंदर किसी प्रधानमंत्री का, बाई नेम नाम आता हो मुझे लगता है आजादी के बाद पहली बार ऐसा हआ। हम तो राष्ट्रपति जी से निवेदन करते हैं कि इन कागजों की जांच के लिए सुप्रीम कोर्ट से वो निवेदन करें कि कोई इसकी कमेटी बनाई जाए। लेकिन मैं ये कहना चाहता हूं कि पिछले 4 दिन से देख रहा हूं कि जिस तरह से आम जनता लाइनों के अंदर लगी हुई है और उनको....कभी उनका मजाक उड़ाया जाता है, उनको कहा जाता है ये टूजी वाले लगे हुए हैं, कोयला घोटाले वाले लगे हुए है और कभी उनको देश भक्ति का पाठ पढ़ाया जाता है कि तीन घंटे लाइन में लग लिए तो क्या हो गया! देशभक्ति करो। ये जनता सवा सौ करोड़ तो करें देशभक्ति और तुम बैठकर लो पैसे! ये नहीं चलेगा। एक मन में ये प्रश्न उठता है कि ये बड़े-बड़े लोग तो मोदी जी के दोस्त हैं, इनके साथ तो लेन-देन का रिश्ता है। छोटे-छोटे जितने आम आदमी हैं, उनको क्यों तंग कर रखा है, उनको क्यों लाइन में रखा है, इसके ऊपर भी हमने लगातार सोच विचार किया, 1,1400 करोड़ का लोन तो माफ कर दिया इन बड़ी-बड़ी कंपनियों का। 8,55,000 करोड़ रूपये का टोटल लोन है, इन एक कुछ चंद बड़ी-बड़ी कंपनियों का जिसमें से पांच लाख करोड़ रुपये का लोन वो तो सीएजी की भी रिपोर्ट है, सीएजी ने भी कहा है कि ये लोन वापस आने वाला नहीं है। या तो ये पैसा लेकर बाहर भाग गए और या इन्होंने फ्रॉड करके लोन लिया, 5 लाख करोड़ रूपये का लोन अभी। बैंक तो खाली हो रहे हैं, 1 लाख 14 हजार करोड़ तुमने माफ कर दिया, बैंक खाली हो रहे हैं। तो अभी ये स्कीम लेकर आये हैं 500-500, 1000-1000 के नोट अब ये छोटे-छोटे लोग सारे जमा कराएंगे अपना पैसा और कल टीवी चैनल

में बीजेपी वाला कह रहा था कि अब इस पैसे से भी हम लोन देंगे इन कंपनियों को। तो अब ये लोगों का पैसा सुरक्षित है कि नहीं बैंक में, ये भी एक बहुत बड़ा प्रश्न है। तो दोनों तरफ से लूट मचा रखी है। बड़े-बड़े लोगों से पैसे खाते हैं और छोटे-छोटे लोगों को लाइन में लगा के उनकी जिंदगी की सारी सेविंग्स बैंकों में चली जाएगी और ये उठा-उठा के 15-20 बड़े-बड़े उद्योगपतियों को बैंकों से दे देंगे और फिर विजय माल्या की तरह देश से भगा देंगे।

मैं कहना चाहता हूं प्रधानमंत्री जी, आप अमीरों के प्रधानमंत्री हैं, आप अपने दोस्तों के प्रधानमंत्री हैं, आप काला धन वालों के प्रधानमंत्री हैं, आप काला धन वालों के प्रधानमत्री है, आप गरीबों के दुश्मन हैं। जिस तरह से आज गरीबों के मुंह से निवाला छीन लिया, आप कहते हो कड़वी चाय पी रहा है गरीब आदमी, आपने काले धन की कड़वी चाय पिलाने के नाम पे उनको जहर पिला दिया, आज पूरे देश के लोगों को! मेरे को याद है, जब हवाला कांड हुआ था नाईनटीज में आडवाणी जी का नाम पे उनको जहर पिला दिया आज पूरे देश के लोगों को! मेरे को याद है, जब हवाला कांड हुआ था नाईनटीज में, आडवाणी जी का नाम आया था उसमें। शायद एल के ए शायद लिखा था बस इनीशिएलज लिखे थे। उन्होंने एक ईमानदारी की मिशाल कायम की थी। उन्होंने इस्तीफा दे दिया था, पूरे देश को गर्व हुआ था आडवाणी जी के ऊपर। आज हम देखेंगे कि नरेंद्र मोदी जी का नाम जब तीन कागजों के अंदर आया है तो क्या वो अपने वरिष्ठ नेता आडवाणी जी से कुछ सीख लेंगे या केवल इन कागजों को दरकिनार करेंगे।

अंत में, मैं इस सदन के माध्यम से राष्ट्रपति जी से अपील करना चाहता हूं कि इस स्कीम को तुंरत वापस लिया जाए, काले धन के खिलाफ हम भी हैं, अगर दुबारा इस स्कीम को लाना है, सोच समझ कर लाओ, टाइम तो जनता को एक महीने का, 2 महीने का टाइम दो और सारी तैयारी करके लाओ। करके लाओ, हम आपका साथ देंगे, लेकिन आज जो ये स्कीम है, अगर ये वापस नहीं ली गई तो पूरा देश बैठ जाएगा, पूरी अर्थव्यवस्था बैठ जाएगी। इस स्कीम को तुरंत वापस लिया जाये राष्ट्रपति जी से निवेदन करते हैं कि ये जितने कागज हैं, इनकी जांच के लिए सुप्रीम कोर्ट को लिखें ताकि सुप्रीम कोर्ट इस पर एसआईटी बैठा कर इसकी जांच कराये। बहुत-बहुत शुक्रिया।

इसमें मैं अमेंडमेंट करना चाहता हूं जो रैजूलुशन था अंत में "Resolves to urge upon the Hon'ble President of India to refer the allegations of receipt of bribes by persons holding high offices from 'Birla' and 'Sahara Group' to Hon'ble Supreme Court of India with the request to order suitable inquiry."

अध्यक्ष महोदय : अब माननीय मुख्यमंत्री श्री अरविंद केजरीवाल जी द्वारा प्रस्तुत संशोधित संकल्प सदन के सामने है :

जो इसके पक्ष में है वो हां कहें
जो इसके विरोध में हैं वो न कहें।
(सदस्यों के हां कहने पर)
हां पक्ष जीता हां पक्ष जीता

यथा संशोधति संकल्प सर्वसम्मति से स्वीकार हुआ।

इससे पहले कि में सदन को अनिश्चित काल तक के लिए स्थगित करूं, स्वस्थ संसदीय परंपराओं का निर्वाह करते हुए सदन के नेता, माननीय मुख्यमंत्री श्री अरविंद केजरीवाल जी, माननीय उप मुख्यमंत्री श्री मनीष सिसोदिया जी, सभी मंत्रीगण, श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय नेता प्रतिपक्ष तथा सदन के सभी माननीय सदस्यों का हार्दिक आभार प्रकट करता हूं। इसके अलावा विधान सभा सचिव तथा सचिववालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों के साथ-साथ दिल्ली सरकार के मुख्य सचिव व उनके समस्त अधिकारियों, दिल्ली पुलिस, खुफिया एजेंसियों, सी. आर. पी. एफ. बटालियन-55 तथा लोक निर्माण विभाग के सिविल, इलैक्ट्रिकल व हॉर्टिकल्चर डिविजन, अग्निशमन विभाग आदि द्वारा किये गये सराहनीय कार्य के लिए भी उनका धन्यवाद करता हूं।

विधान सभा की कार्यवाही को मीडिया के माधयम से जन-जन तक पहुंचाने में अहम भूमिका निभाने वाले सभी पत्रकार साथियों का भी मैं हार्दिक धन्यवाद करता हूं।

अब मैं माननीय सदस्यों से अनुरोध करूंगा कि वे राष्ट्र गान के लिए खड़े हों।

(राष्ट्र गान जन-गण-मन)

अब सदन की कार्यवाही अनिश्चित काल तक के लिए स्थगित की जाती है।

(सदन की कार्यवाही अनिश्चित काल के लिए स्थगित की गई।)